CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागमाला

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, भदैनी
वाराणसी-5

लय
णसी-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Historical Research Series

Published under the Patronage
of
The Government of Bihar

GENERAL EDITOR
ANANTALAL THAKUR
DIRECTOR
K. P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE

VOL XV

RĀGAMĀLĀ

KASHI PRASAD JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Published on behalf of the

K. P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE, PATNA

BY ITS DIRECTOR

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

All Rights Reserved

1976

Price Rs. 7.00

PRINTED IN INDIA AT THE TEXTBOOK PRESS PATNA-1

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐतिहासिकशोधग्रन्थमाला संख्या–१५

यशोदानन्द शुक्ल कृत

रागमाला

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

श्रीजगदीश्वर पाण्डेय एम. ए.
शोधसदस्य, काशी प्रसाद जायसवाल शोधसंस्थान

द्वारा

सम्पादित

काशी प्रसाद जायसवाल शोधसंस्थान, पटना

१९७६ मूल्य ७ रुपये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Historical Research Series No. XV

RĀGAMĀLĀ

of

YAŚODĀNANDA ŚUKLA

Edited by

Jagdiswar Pandey, M. A.

Research Fellow, K. P. Jayaswal
Research Institute

K. P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE, PATNA

1976 Price Rupees Seven only

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

FOREWORD BY THE GOVERNMENT OF BIHAR

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

1. The Government of Bihar established the K.P. Jayaswal Research Institute at Patna in 1950 with the object *inter-alia,* to promote historical research, archaeological excavations and investigations and publication of works of permanent value to scholars. This Institute is one among the many started by this Government as a token of their homage to the tradition of learning and scholarship for which ancient Bihar was noted. Apart from the Kashi Prasad Jayaswal Research Institute, five others have been established to give incentive to research and advancement of knowledge—the Nalanda Institute of Research and Post-Graduate Studies in Buddhist Learning and Pali at Nalanda, the Mithila Institute of Research and Post-Graduate Studies in Sanskrit Learning at Darbhanga, the Bihar Rashtrabhasha Parishad for research and advanced studies in Hindi at Patna, the Institute of Post-Graduate Studies and Research in Jainism and Parkrit Learning at Vaishali and the Institute of Post-graduate Studies and Research in Arabic and Persian Learning at Patna.

2. As part of this programme of rehabilitating and re-orientating ancient learning and scholarship, K. P. Jayaswal Research Institute has undertaken the editing and publication of the Tibetan Sanskrit Texts Series with the co-operation of scholars in Bihar and outside. Two more series of Historical Research works and Sanskrit classical Texts for elucidating the history and culture of Bihar and India have also been started by the Institute.

The Government of Bihar hope to continue to sponsor such projects and trust that this humble service to the world of scholarship and learning would bear fruit in the fulness of time.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Historical Research Series No. XV

RĀGAMĀLĀ

of

YAŚODĀNANDA ŚUKLA

Edited by

Jagdiswar Pandey, M. A.
Research Fellow, K. P. Jayaswal
Research Institute

K. P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE, PATNA

1976 Price Rupees Seven only

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

FOREWORD BY THE GOVERNMENT OF BIHAR

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

1. The Government of Bihar established the K.P. Jayaswal Research Institute at Patna in 1950 with the object *inter-alia,* to promote historical research, archaeological excavations and investigations and publication of works of permanent value to scholars. This Institute is one among the many started by this Government as a token of their homage to the tradition of learning and scholarship for which ancient Bihar was noted. Apart from the Kashi Prasad Jayaswal Research Institute, five others have been established to give incentive to research and advancement of knowledge—the Nalanda Institute of Research and Post-Graduate Studies in Buddhist Learning and Pali at Nalanda, the Mithila Institute of Research and Post-Graduate Studies in Sanskrit Learning at Darbhanga, the Bihar Rashtrabhasha Parishad for research and advanced studies in Hindi at Patna, the Institute of Post-Graduate Studies and Research in Jainism and Parkrit Learning at Vaishali and the Institute of Post-graduate Studies and Research in Arabic and Persian Learning at Patna.

2. As part of this programme of rehabilitating and re-orientating ancient learning and scholarship, K. P. Jayaswal Research Institute has undertaken the editing and publication of the Tibetan Sanskrit Texts Series with the co-operation of scholars in Bihar and outside. Two more series of Historical Research works and Sanskrit classical Texts for elucidating the history and culture of Bihar and India have also been started by the Institute.

The Government of Bihar hope to continue to sponsor such projects and trust that this humble service to the world of scholarship and learning would bear fruit in the fulness of time.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्लाघ्यः स एव गुणवान् रागद्वेषवहिष्कृता ।
भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती ॥

कल्हण-राजतरङ्गिणी, १-७

"He alone is a worthy and commendable historian, whose narrative of events in the past like that of a judge is free from passion, prejudice and partiality."

Kalhaṇa, Rājataraṅgiṇī I. 7.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-सूची

1.	Foreward	..	..	
२.	प्रधानसम्पादक का वक्तव्य	..	..	
३.	भूमिका	..	..	क
४.	मंगलाचरण	..	..	१
५.	जगत सेठ परिवार का विवरण	..	..	२
६.	सुर ग्राम मूर्छना श्रुति का विचार	..	..	६
७.	त्रिविध रागजाति विचार	..	..	१०
८.	राग लक्षण	..	..	१६
९.	रागोत्पति	..	..	१६
१०.	राग नाम	..	..	१६
११.	भैरव समाज	..	..	१७
१२.	मेघ समाज	..	..	१७
१३.	श्री राग समाज	..	..	१८
१४.	वसंत राग समाज	..	..	१८
१५.	कारनाट समाज	..	..	१८
१६.	हिंडोल समाज	..	..	१९
१७.	भैरव राग	..	..	२०
१८.	मेघमल्हार राग	..	..	३०
१९.	श्री राग	..	..	४०
२०.	वसंत राग	..	..	४९
२१.	कारनाट राग	..	..	५९
२२.	हिंडोल राग	..	..	६८
२३.	रागरागिनी का समय	..	..	७८
२४.	गायन गुणदोष कथन	..	..	७९
२५.	ताल	..	..	८२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रधान सम्पादक का वक्तव्य

स्थापना के काल से जायसवाल शोधसंस्थान ने विहार तथा भारत के प्राचीन ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक सम्पदाओं का संग्रह संरक्षण तथा प्रचार में आत्मनियोग किया है। रागमाला का प्रकाशन संस्थान के उद्देश्य का परिपूरक है। सूबे बंगाल, विहार तथा उड़ीसा के इतिहास में जगत सेठों का योगदान महत्त्वपूर्ण था। ग्रन्थकार यशोदानन्द शुक्ल जगत सेठों के आश्रय में थे। प्रसिद्ध पलासीक्षेत्र के युद्ध के एक साल वाद इस ग्रन्थ की रचना परिपूर्ण हुई थी। इस में जगत सेठों के वंश तथा विभिन्न राजनैतिक और अर्थनैतिक महत्त्वों के वारे में प्रत्यक्षदर्शी का प्रामाणिक विवरण उपलब्ध है। संगीतशास्त्रीय ग्रन्थ होते हुए भी यह सामाजिक तथा राजनैतिक इतिहास के एक मौलिक अभिलेख की मर्यादा पाने के योग्य है।

संस्थान के शोध सदस्य पण्डित श्री जगदीश्वर पाण्डेय एम० ए० ने इस ग्रन्थ को विशेष यत्न तथा नैपुण्य के साथ सम्पादन किया है। आशा की जाती है कि विशेषज्ञों के द्वारा यह ग्रन्थ उचित समादर लाभ करेगा।

विहार सरकार द्वारा अतिरिक्त आर्थिक साहाय्य मिलने के कारण ही यह ग्रन्थ इतनी जल्दी प्रकाशित हो सका है। इसलिए हम संश्लिष्ट अधिकारिवर्ग के आभारी हैं। विहार टेक्स्टबुक कॉरपोरेशन भी मुद्रण तथा बँधाई में प्रयोजनीय सहायता देने के लिए धन्यवादार्ह है।

गङ्गादशहरा
२०३३

अनन्तलाल ठाकुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में श्वेताम्बर जैन-सम्प्रदाय के फतेचंद नामक एक सेठ ने दिल्ली के वादशाह से वंशानुक्रमिक जगतसेठ की उपाधि प्राप्त की थी। इस समय वंगाल के मसनद को लेकर वहुत अशान्ति थी। झगड़ा, विवाद और युद्धादि से लिप्त रहने के कारण वंगाल में कई एक वार शासन परिवर्त्तन हुआ। स्थानीय राजनीति में जगतसेठ परिवार का विशेष महत्व रहा।

सत्रहवीं सदी के अन्त में हीराचंद नामक फतेचंद के पूर्वज राजस्थान से पटना पहुँचे और महाजनी (ऋण देना) के आधार पर प्रभूत धन-संचय किये और स्थान-स्थान पर धन-संचय के लिये कोठियां वनवायीं। हीराचंद के सात पुत्रों में सवसे छोटे पुत्र मानिकचंद के नाम पर 'मानिकचंद का तालाव' आज भी अनीसावाद, पटना में विद्यमान है। तालाव के चारों तरफ पक्का घाट है जो मरम्मत के अभाव में कहीं-कहीं पर टूट रहा है। यह तालाव वहुत वड़ा है और दो सौ वर्षों से भी प्राचीन है। मानिकचंद उत्तराधिकार में ढाका में अवस्थित कोठी के मालिक वने और मुर्शिदावाद में अपनी गद्दी वनायी। मानिकचंद की कार्यदक्षता से तात्कालिक प्रशासक-वर्ग विशेष प्रभावित हुआ। मानिकचंद ने मुर्शिदावाद स्थित सरकारी टकसाल को समृद्ध किया। वंगाल का राजस्व मानिकचंद के मुर्शिदावाद स्थित कोठी में जमा होता था और उनके दिल्ली कोठी से वह वादशाह के कोषागार में जमा होता था। इससे इनकी प्रतिष्ठा वहुत वढ़ गई। अन्त में ये सूबे वंगाल की सरकार के कोषाध्यक्ष पद पर आसीन हुए। मानिकचंद निःसंतान थे। इनका १७२२ ई० में देहावसान हो गया। इनके दत्तक पुत्र फतेचंद उनकी गद्दी के मालिक हुए। फतेचंद नवाव मुर्शीदकुली खां के विश्वास-भाजन मन्त्रणादाता वने और नवाव मुर्शीदकुली खां की सिपारिश के आधार पर दिल्ली के वादशाह से फतेचंद को जगत सेठ की वंशानुक्रमिक उपाधि मिली। मुर्शीदकुली खाँ के वाद नवाव सुजाउद्दीन खाँ के भी आप विश्वासभाजन मंत्रणादाता थे। १७३९ खृष्टाव्द में सुजाउद्दीन का देहान्त हुआ और उनके पुत्र सरफराज खाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बंगाल के नवाव वने। ये जनप्रिय शासक नहीं थे। अतः इनके विरुद्ध अलीवर्दी को बंगाल की मसनद पर बैठाने के लिये जो षड्यन्त्र रचा गया, फतेचन्द ने उसका नेतृत्व किया। अलीवर्दी का राज्य काल भी ठीक से नहीं चल सका। उड़ीसा और विहार में अफगानों का तथा बाद में मराठा (वार्गी) लोगों का हंगामा हुआ। जगतसेठ फतेचंद ने संपत्ति एवं परामर्श से नवाव अलीवर्दी की सहायता की। एक वार अलीवर्दी की अनुपस्थिति में वार्गियों ने मुर्शिदावाद शहर को लूट लिया तथा जगत-सेठ की गद्दी से दो करोड़ आरकाट मुद्रा भी छीन ली। इससे भी जगतसेठ को गद्दी चलाने में कोई कठिनाई नहीं हुई। ये प्रत्येक वर्ष एक करोड़ रुपया नवाव को देते थे। ऐसा भी कहा जाता है कि इनके पास इतनी विपुल धनराशि थी कि केवल नकद रुपये से गंगा के मुहाने पर बाँध वना सकते थे। सन् १७४४-४५ ई० में अस्सी वर्ष की अवस्था में इनका देहान्त हो गया। जगतसेठ के पौत्र महतावचंद गद्दी पर बैठे। महतावचंद भी नवाव अलीवर्दी के विश्वासी परामर्शदाता थे और फतेचंद के समान महतावचंद भी नवाव अलीवर्दी को प्रचुर सहायता प्रदान करते थे किन्तु अंग्रेज वनियों के साथ इनकी घनिष्ठता वढ़ने लगी। अलीवर्दी के जीवनकाल के अन्तिम भाग में उनके प्रिय नाती सिराज की मसनद प्राप्ति के विरुद्ध जो षड्यन्त्र हुआ, महतावचंद ने उसमें मुख्य भूमिका निभाई थी। अलीवर्दी की मृत्यु के पश्चात् मीरजाफर, रायदुर्लभ, अमींचन्द तथा राजवल्लभ ने जगतसेठ महतावचन्द को इस षड्यन्त्र का नेता वनाकर सिराज को पराजित तथा निहत्था कर दिया। परवर्त्ती नवाव मीरजाफर को प्रयोजनानुसार अर्थ साहाय्य करते रहने के बावजूद मीरजाफर के पतन में इनका मुख्य हाथ था। परवर्त्ती नवाव मीर-कासिम अंग्रेजों के विरोधी थे अतः अंग्रेजों के मित्र महतावचन्द के पूर्ण सहयोग से वे बंचित रह गये। सन्देहवश मीरकासिम ने जगतसेठ महतावचन्द को मुँगेर के दुर्ग में वन्दी बना लिया। बाद में गिरिया की लड़ाई में अंग्रेजों से पराजित मीरकासिम ने मुँगेर छोड़ने से पहले अन्य वन्दियों के साथ-साथ महतावचन्द को गले में बालू का बोरा बाँध-कर गंगा में डुबा दिया। महतावचन्द के मरने के पश्चात् जगतसेठ परिवार श्रीहीन हो गया। हरखचन्द और इन्द्रचन्द दो जगतसेठों का नाम सुनने में आता है। जगतसेठ परिवार का मुर्शिदावाद अवस्थित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विशाल प्रासाद गंगा के गर्भ में विलीन हो गया है। पारसनाथ तीर्थ में जगतसेठ परिवार द्वारा निर्मित कई एक मन्दिर स्थित हैं।

सन् १९६० में काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना के तत्कालीन निदेशक डा० कालीकिंकर दत्त महोदय ने ग्राम अरपा जिला पटना के निवासी पं० यमुना द्विवेदी से कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ क्रय किया था। उसमें यशोदानन्द शुक्ल कृत रागमाला नामक एक ग्रन्थ भी था जिसमें विभिन्न छन्दोनिवद्ध ४१७ पद्य हैं। यह पाण्डुलिपि प्रायः एक सौ वर्ष प्राचीन है। हस्तनिर्मित कागज पर देवनागर अक्षर में लिखा हुआ है। पत्र संख्या, छन्द संख्या, रागरागिनियों के वर्गीकरण वाले गद्य भाग एवं पुष्पिका लाल स्याही में लिखी गई है तथा पद्य भाग काली स्याही में सुन्दर अक्षरों में लिखा गया है। पोथी में सव मिलाकर ४६ पत्र हैं जिसका प्रथम एवं अन्तिम पृष्ठ सादा है। पाण्डुलिपिका आकार १६·५ सें० मी०×२५·५ सें० मी० है। प्रति पृष्ठ २० से २३ पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति १५ से० २० अक्षर हैं। यह पाण्डुलिपि सुवाच्य है। प्राचीन हिन्दी ग्रन्थों में वर्णविन्यास में निर्दिष्ट शृंखला नहीं थी। यहाँ भी साधारण रीति का ही अनुसरण किया गया है। डा० दत्त ने Proceedings, I H R Commission में EVEDENCE OF A NEWLY DESCOVERD HINDI MANUSCRIPT ABOUT THE JAGAT SETHS शीर्षक निवन्ध में इस पोथी की विशेषता के वारे में आलोचना की।

परवर्त्ती निदेशक डा० सैयद हसन अस्करी महोदय ने इसका संपादन कार्य अधोहस्ताक्षरी को सौंपा। अनुसंधान के क्रम में यह ज्ञात हुआ कि रागमाला की एक अन्य प्रति नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में सुरक्षित है। प्राथमिक प्रतिलिपि प्रस्तुत करते समय स्थान स्थान पर अशुद्धियाँ तथा पंक्ति-त्रुटियों को देखकर प्राप्त अन्य पोथी से इसका मिलान करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। तदनुसार नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में जाकर मैंने पाठ संकलन किया। यहां की पाण्डुलिपि ५० वर्ष प्राचीन है। यह साफ एवं सुंदर देवनागर अक्षर में लिखा गया है किन्तु इसका पाठ अत्यन्त भ्रष्ट है। यह आधुनिक मशीन निर्मित कागज पर नीली स्याही में लिखा गया है। इसका आकार १६ से०मी०×२१ सें०मी० है। इसमे ३५ पत्र हैं जिसके दोनों पृष्ठों पर लिखा गया है। ग्रन्थ का आरंभ प्रथम पत्र के प्रथम पृष्ठ से होता है। पत्र संख्या ३५ के अन्तिम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ पर समाप्त होता है। अन्तिम पृष्ठ पर केवल तीन पंक्तियाँ हीं लिखी गई हैं, शेष सादा है। इस पाण्डुलिपि में प्रतिपृष्ठ २१ पंक्तियाँ तथा प्रति-पंक्ति अक्षर संख्या २३ है। इस पाण्डुलिपि का वर्ण नीलाभ है। इसकी हस्तलेख संख्या २४५९।१४१९ है। प्राप्तिस्थान—पं० रघुनाथ राम, गायघाट, वाराणसी है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि का विवरण "हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण", द्वितीय खंड पृ० २४९ नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित, पर अंकित है।

प्रस्तुत संस्करण में संस्थान की पाण्डुलिपि को 'क' तथा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की पोथी को 'ख' प्रति माना गया है। दोनों के पाठों को मिलान करने पर 'क' प्रति शुद्धतर पायी गई तथापि ख प्रति में स्थान स्थान पर शुद्ध पाठ भी प्राप्त हुए जो क प्रति में भ्रष्ट अथवा अलभ्य थे। पाठ भेद के स्थलों पर अधिकतर संलग्न पाठ को स्वीकार किया गया है और अपर पाठ को पाद-टिप्पणी के रूप में रखा गया है। वर्ण-विन्यास में पाण्डुलिपि की प्रक्रिया का ही अनुसरण किया गया है—उसका आधुनिकीकरण नहीं किया गया है।

ग्रन्थकार

रागमाला के ग्रन्थकार यशोदानन्द शुक्ल ने अपना परिचय देते हुए अपने को मालवीय वंशोद्भूत ब्राह्मण कहा है। पुष्पिका में कवि ने अपने को "श्रीमन्मालवीय द्विज सकल कला-कोविद रसिक सुषकंद शुक्ल यशोदानंद" कहा है। इनका उपनाम कविदास था। ग्रन्थ के आरंभ में गणेश, सरस्वती एवं गुरु की इन्होंने वन्दना की है। कवि वैष्णव प्रतीत होते हैं। ग्रन्थ रचना का काल कवि ने निर्देश कर दिया है। सम्वत् १८१५ (१७५८ ई०) चैत्र शुक्लपक्ष की नवमी तिथि, रविवार को यह ग्रन्थ सम्पन्न हुआ। रागमाला में इन्होंने कवित्त, दोहा, सवैया, सोरठा एवं छपै (षट्पद) छन्दों के द्वारा विभिन्न राग एवं रागिनियों का वर्णन किया है। प्रसंग क्रम से यहाँ मानिकचंद नाम से विख्यात जैन सेठ का तथा उनके भानजा फतेचंद का विवरण दिया हुआ है। मानिकचंद का पूर्व निवास 'वुलंद' था। वाद में आकर ये बंगाल में वस गये। दिल्ली के वादशाह की सभा में इनका विशेष सम्मान था। पुत्रहीन होने के कारण मानिक-चन्द ने वृद्ध हो जाने पर ओसवाल कुलोत्पन्न अपने भानजा फतेचन्द को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोद लेकर इन्हें अपनी अतुल धन-संपत्ति का मालिक वना दिया। मानिकचन्द की मृत्यु के पश्चात् फतेचन्द ने राजदरवार तथा अन्य क्षेत्रों में यश-प्रतिष्ठा एवं प्रभूत धन-संचय किया। बंगाल के अतिरिक्त अन्य सूबों एवं दरवारों में इनका प्रचुर प्रभाव था। इनके गुणों से आकृष्ट होकर सम्राट् मुहम्मद शाह ने इन्हें वंशानुक्रमिक जगतसेठ की उपाधि प्रदान की। इनके दो पुत्र हुए जिनमें वड़े आनन्दचन्द एवं छोटे दयाचन्द थे। आनन्दचन्द पिता के प्रीतिपात्र वने। ये अत्यन्त प्रवल थे तथा चारो तरफ इनकी कीर्त्ति फैली हुई थी। इनकी नीति-निपुणता एवं जैनधर्म-परायणता की प्रशंसा कवि ने की है। आनन्दचन्द की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र महताव राय को जगतसेठ की गद्दी मिली। महताव राय के प्रभुत्व एवं गुण-गरिमा की प्रशंसा कवि ने वहुत अधिक की है। महताव राय की प्रतिष्ठा आगरा, उड़ीसा, अजमेर, अजीमावाद (पटना), आरकाट, अवध, उज्जैन, अंग (भागलपुर), इरान, इरखंग (?) अरव, आसाम, इलाहावाद, ओड़छा, आजमगढ़, अकवरनगर, आंवेर, अहमदावाद, इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली एवं निकटवर्त्ती भू-भाग), इमन (यमन), अमरनगर, अलका और अमरावती तक फैल गई थी और स्वयं ये वंगाल में निवास करते थे। ये इतने प्रभावशाली थे कि दिल्ली के वादशाह से खिल्लत एवं खिताव इन्हें घर बैठे ही प्राप्त हो गये थे। इन्हीं के लिए यशोदानन्द शुक्ल ने रागमाला नामक पुस्तक की रचना हिन्दी कविता में की जिससे सुगमता पूर्वक रागरागिनियों को समझ सकें। राग-रागिनियों पर संस्कृत में पुस्तकें उपलब्ध थीं, अतः सभी लोग उसका उपयोग नहीं कर सकते थे। महतावराय के दरवार में संगीतज्ञ लोग राग-रागिनियों को गाया करते थे। अतः महताव राय को समझाने के लिये सरल हिन्दी भाषा में रागमाला की रचना करने की आवश्यकता प्रतीत हुई होगी। इस सरल भाषा-ग्रन्थ में यशोदानन्द शुक्ल ने संगीत ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन कर संगीत-शास्त्र के जटिल विषयों यथा राग, ग्राम, स्वर, मूर्छना, श्रुति एवं ताल आदि का संक्षेप में सूक्ष्मातिसूक्ष्म भेद सहित वर्णन कर दिया है और उनका दावा है कि इसके पढ़ने से किञ्चित मात्र भी मन बोझिल नहीं होगा। कवि ने संगीत-समुद्र से अपनी बुद्धि से मणियों की माला के समान इस नूतन ग्रन्थ रागमाला की रचना की है और अंत में कवि कहते हैं कि जो इस नये ग्रन्थ का अध्ययन करेगा वह संगीत-शास्त्र का पूर्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञाता हो जायेगा एवं राग रागिनियों तथा ताल आदि के मर्म को सुगमता पूर्वक हृदयङ्गम कर सकेगा।

कविदास ने राग-रागिनियों का वर्णन करने से पूर्व स्वर से प्रारंभ किया है। इनके अनुसार स्वर सात, ग्राम तीन, मूर्छना इक्कीस और श्रुतियाँ वाईस होती हैं। स्वर सात प्रकार के होते हैं, यथा—षड़ज,ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। इसके वाद सातों स्वरों के लक्षण का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् ग्राम का लक्षण भेद सहित कहा गया है। यह तीन प्रकार का कहा गया है—(१) आडव (२) षाडव और (३) संपूरन। (१) आडव—जहाँ पर पाँच स्वरों का मिलन होता है उसे आडव नाम से अभिहित किया जाता है। (२) षाडव—जहाँ पर छः स्वरों का मेल होता है उसे षाडव कहते हैं। (३) संपूरन—जहाँ पर सातो स्वर मिल जाते हैं वह संपूरन कहा जाता है। (१) उदारा (२) मुदारा एवं (३) तारा तीन संज्ञायें हैं किन्तु विरल प्रचार होने के कारण इनका वर्णन इन्होंने नहीं किया है। इसके वाद इक्कीस प्रकार की मूर्छनाओं का तथा वाईस प्रकार की श्रुतियों का विवेचन हुआ है। उसके वाद रागजाति पर विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है। रागों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई तथा रागों के नाम का विवेचन, इसके वाद हुआ है। राग एवं ताल का कोई अन्त नहीं है। हनुमदादि के अनेकों मत हैं, अतः उनके फेरे में न पड़ कर इन्होंने सभी ग्रन्थों के सार को लेकर इस ग्रन्थ की रचना की है तथा राग एवं रागिनियों के लक्षण एवं उदाहरण का वर्णन किया है।

राग

राग छः प्रकार के हैं। रागिनियाँ ३६ हैं। प्रत्येक राग के ६ पुत्र तथा ६ पुत्रवधुएँ हैं। प्रत्येक राग का एक सखा तथा एक सखी भी है। इस प्रकार प्रत्येक राग का परिवार २१ का हो जाता है और सभी रागों के परिवारों के कुल १२६ भेद होते हैं। रुद्र, नारद प्रभृति का भी यही मत है।

१. भैरव राग

भैरव राग की ६ पत्नियाँ हैं, यथा—रामकरी, मालसिरी, धनासिरी, सिंधुरा, भैरवी एवं असावरी; तथा ६ पुत्र धौल, श्याम, शुद्ध, मालकौस,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अजयपाल तथा कन्हरनट हैं। उसी प्रकार रेवा, रँभेली, सूही, सूहो, भठियाल एवं अष्टी ये ६ पुत्रवधुएँ हैं। ऋषभ सखा एवं सोहनी सहेली है।

२. मल्हार राग

मेघमल्हार राग को कान्हरा, किदारा, पूरबी, विलावली, माधवो और गौडी अथवा कोडा ये ६ रागिनियाँ पत्नी हैं। छायानाट, शुद्धनाट, गौड, हमीरनाट, सावंत और अडाना ६ पुत्र, तथा जैतसिरी, जोगिया, पूरिया, ईमन, देशी और राजविजै ६ पुत्रवधुएँ हैं। मेघमल्हार राग का सखा गौरा तथा सखी नटमल्हारी है।

३. श्री राग

श्री राग की पत्नियाँ सुभगा, गंधारी, गौरी, कुमारी, विलावली और विरागी ६ रागिनियाँ हैं। श्री राग के ६ पुत्र जैतकल्यान, षट्राग, श्याम-राम, वागेश्वर, हेमकल्याण और खेमकल्याण हैं, तथा देवकली, माँझ, गौडसारंग, सरस्वती, परज एव जाजवन्ती ६ पुत्रवधुएँ हैं। श्री राग का सखा पंचम एवं सखी सकोची है।

४. बसंत राग

बसंत राग की पत्नियाँ ललित, विभास, पटमंजरी, पंचमी, गूजरी एवं टोडी हैं। दीपक, देसाख, विहाग, सहाना, सारंगनाट तथा अहीरनाट ६ पुत्र, तथा सोरठ, देवगिरी, बंगाली, त्रिबेनी, गुनकरी एवं खंभावती ६ पुत्रबधुएँ हैं। वसंत राग का सखा कल्याननाट तथा सखी सारंग है।

५. कारनाट राग

कारनाट राग की पत्नियाँ नटी, भूपाली, कल्याण, रामकेली, कमोद एवं गारा हैं। मारू, वहुनागर, टंक, सागर, लंकदहन और गौरमालव ६ पुत्र तथा ककुभ, अहेरी, श्यामपूरिया, समरफली, अल्हैया तथा बृन्दावनी ६ पुत्रवधुएँ हैं। इनके सखा पखार तथा सखी ललितपंचमी है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६. हिंडोल राग

हिंडोल राग की पत्नियाँ दीपका, देसकार, वरारी, मालबी, पाहिडा एवं मरहठी हैं। संकराभरन, सुमत-विलास, तिलककमोद, केदारनाट, कमोदनाट एवं सक्रौन ६ पुत्र हैं तथा चैती, सुघराई, काफी, लीलावती, हरसिंगार एव नायकी ६ पुत्रवधुएँ हैं। सखा वडहंस और सखी भीमपलासी है।

इसके पश्चात् राग एवं रागिनियों के समय के वारें में चर्चा है और गायन के गुण एव दोषों का विवेचन किया गया है। वाद में ताल एवं ताल के प्रयोजन की चर्चा की गई है।

माननीय डा० काली किंकर दत्त, संस्थान के भूतपूर्व निदेशक, का मैं आभारी हूँ, जिनका उपदेश वरावर पाता रहा। आदरणीय डा० सैयद हसन अस्करी, भूतपूर्व निदेशक, का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन कार्य मुझे सौंपा। ये संस्थान से अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् भी इस कार्य को मुझे करने के लिये प्रेरित एवं उत्साहित करते रहे। संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो० श्री अनन्तलाल ठाकुर का मैं अत्यन्त आभारी हूँ, जिनके प्रयास से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो सका। इतना शीघ्र ग्रन्थ का प्रकाशन इनके प्रयास के विना संभव नहीं था। अतः मैं हृदय से प्रो० ठाकुर का आभारी हूँ। डा० जटाशंकर झा एवं श्री ब्रह्मदेव प्रसाद अम्वष्ठ, संस्थान के वरीय शोध सदस्यों, का भी मैं आभारी हूँ, जिनका परामर्श यथा-समय मुझे प्राप्त होता रहा। वहुत प्रयास करने के पश्चात् भी कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं। आशा है पाठक उन्हें सुधार लेंगे।

जगदीश्वर पाण्डेय

२१-६-'७६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रागमाला

अथ मंगलाचरण

कवित्त

बंदत सकल सुरबृन्द औ [1]मुनिंद मनवंछित[2] लहत सुषसिद्धि[3] के सदन है।
चारो फल दीबे को जु धारे भुज चार जिंहि गिरिजा[4]तनयमुख एक ही रदन है।
वदन लसत भाल वरद विसाल उर माल कविदास दुख दारिद कदन है।
असुर संघारनि ज्यों अंव जगतारनि त्यों विघिन विदारन[5] को वारन वदन हैं ॥१॥

अन्य च

ज्यों जग जोति पियूष मयूष उगै तम तौम नसे ततकालहिं।
ज्यों रितु ग्रीषम भानु उगैं पुनि सूषत रूषर सारस जालहिं।
बुंद परै वरषा रितु ज्यों जरि जात जवास कृषी परिपालहिं।
त्यों कविदास प्रकासक हैं सव विघ्न नसैं सुमिरे गनपालहिं[6] ॥२॥

अथ सरस्वती जू की अस्तुति

जाको ध्यान धरि[7] मन ब्यास मुनि वालमीक[8] सुधा ते सरस सव वचन उचारे हैं।
जाके अंग संगहीतें चार मुष चारौ वेद आप कमलासन जू सुगम उचारे हैं।
पूजिकै पदारविंद जाको सुर नरवृंद वंदित[9] चरन गुरुनाम उर धारे हैं।
होय वरदाई[10] सोई सारदा सहाई मेरे वचन विलास[11] कविदास के संभारे हैं॥३॥

---

१. वो, ख २. वंचित, ख ३. सिधि ख ४. गिरजा ख ५. विदारनि, क ६. °पालह, ख ७. धार ख ८. बालमक ख ९. बदेत् ख १०. वरदई ख ११. विलसं ख।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ गुरु की अस्तुति

जासु कृपा जगदीश मिलैं रजनीस समान विवेक वढैं ।
जासु कृपा सव स्वारथ औ परमारथ हूँ लहि खेद कढैं ।
जासु कृपा जगवागविलास सदा कविदास पवित्र पढैं ।
ता गुरु के पद[१] पंकज द्वै मम हीय सरोवर माहिं मढैं ।।४।।

दोहा

भये जगत विष्यात जस[२] रतिपति रूप रसाल ।
ओसवाल[३] कुल मानसर मानिक चंद मराल ।।५।।

कवित्त यथा

दिल्ली में दवाय दिन्हीं सान सव साहन की जापै आप दिल्लीपति प्रेम अति कीन्हें हैं।
मतिमान जानिकै सुजान सुखदान पुनि करि सनमान सरपेच पान दीन्हें हैं ।
कहैं कविंदास जग सुजस प्रकास जासु गुन को निवास[४] गुनीलोग[५] जिहि चिन्हे हैं।
आनंद को कंद सेठ[६] मानिकचंद निरदंद वषत बुलंद[७] आय बंगवास लीन्हें हैं ।।६।।

दोहा

बसि वंगाला वस कियो निज मति के परभाव ।
जिनकी आज्ञा देसमें मानै राजा राव ।।७।।
संपति लसति सदा सदन संतति भइ न एक[८] ।
जरा निकट आयो जबै तव यह कियो विबेक ।।८।।

भागिनेय अति सीलजुत फतेचंद सुभ नाम ।
तिन्हैं गोद लै सुत कियो सौंप्यौ निज धन धाम ।।९।।
तजि संसार असार अति सेठ जु मानिकचंद ।
वसे जाय बैकुंठ में जहां नहीं दुखदँद ।।१०।।

तव पृथ्वी पृथु[९] से भये फतेचंद विष्यात ।
सुजस दसो दिस जासु भौ सरदचंद अवदात ।।११।।

---

१. पवित्र .... पद० केवल क २. जग क ३. नउसवाल ख
सिवास ख ५. लोक, ख ६. सेव ख ७. विलंद ख ८. अनेक क ९. पृथ, क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवित्त यथा

सुंदर पुरंदर लौं प्रभुता प्रकास जासु[१] गुनके निवास गुनी लोगन वषाने हैं।
अधिक उदार अधिकार दरवारन में सूवा सरदार मतिमान जिंहि जाने हैं।
कहैं कविदास जाकी कीरति करन कैसी कलि में कलपंतरु जाचिकन माने हैं।
आनंद के कंद ओसवाल कुल अरविंद[२] ब्रध्न से सुषद फतेचंद पहिचाने हैं ।।१२।।

अन्य च

जौन्ह सी जगत जासु कीरति जगमगात अरि[३] जलजात लषि दुरि लाज सौं।
निज कुल-कुमुद सुविकसित विलोकि भौं लीन्हों हरि लोक सोक गुन ग्रंसु साजसौं।
कहै कविदास जग दुष तम नास कीन्हों अनुग चकोर जाके सुषित[४] समाज सौं।
अमित अमंद दुति बंदत नरिंद जाको फतेचँद साहु बँग राजै द्विजराज सौं ।।१३।।

दोहा

जाके गुनगन सौं विवस भये महँमद साह।
जगतसेठ पदबी दई सादर दिल्ली माँह ।।१४।।
सकल बंगाला सौंपि कै विदा किया निजधाम।
जगतसेठ जगविदित भे फतेचंद सुभ नाम ।।१५।।
तिनके[५] द्वैसुत दस्र[६] लौं[७] भये जगत विष्यात।
वड़े सुआनंदचंद जू दयाचंद लघु भ्रात ।।१६।।
आनंदचंद अनंत मति पुहुमी प्रवल प्रताप।
फतेचंद[८] जगसेठ जू मानत[९] है जिहि आप ।।१७।।

कवित्त यथा

राजन की राजी जाके द्वार चढि[१०]वाजी[११] आवैं करैं कारसाजी तऊ तरसै दरस को।
दैव जोग जाय तो सलाम करि दूर हीं ते आवै ऐसो कौन है जू परसै फरस को।

---

१. जसुं, ख २. अरिविंद ख ३. जगत .... अरि॰ ख प्रति में अनुपलब्ध ४. सुषत ख ५. जिनके ख ६. दस्व ख ७. लौ केवल क प्रति में उपलब्ध ८. चंदअनंत .... फतेचंद ख प्रति में अनुपलब्ध ९. मानेस ख १०. वढि ख ११ कती ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसो तप तेज छिति तपन समान तप्यो कँप्यो करै कूर नर वरस वरस को ।
सुजस प्रकास कविदास जासु देस देस आनंदचंद सेठ सौं सुन्दर सरस को ।।१८।।

अन्य च

बुधिवल सकल सुघर नर वसि कीन्हें दीन्हें दान गुनवान लोगन[१] उदार है ।
नीत में निपुन पुनीत परमारथ काज करत अनवरत धर्म उरधार है ।
कहत प्रवीन कविदास यौं प्रकास जाकी त्रास तें थरथरात धीर सरदार है ।
पारसनाथ पावन पदारविंद[२] पूजिकै आनंदचंद[३] सेठ भे भवसिंधु पार है ।।१९।।

दोहा

तिनके पुत्र पवित्र तन[४] भये राय महताव ।
जैसे छीर समुद्र में उदित[५] होत महताव ।।२०।।
निज कुल-कुमुद प्रकास करि नाम उदित संसार ।
सुषित भयो सव लोक लखि जिनकी जोति अपार ।।२१।

कवित्त यथा

नीत निपुनाई सुघराई सव काजन में रस रसिकाई औ लुनाई सव अंग में ।
बचन गंभीरताई साधु[६] में सुधाई जासु रूप की निकाई ऐसी जैसी है अनंग में ।
बुद्धि में विमलताई[७] पूरी प्रभुताई पुनि लोक मनभाई कविदास[८] बास रंग में ।
राजै सुखदाई महताव राय[९] नाम पाई कीरति जुन्हाई सी सुहाई सव बंग में ।।२२।।

पुनः[१०]

प्रभुता प्रगट पुरहूत लौं सपूत पुनि अर्जुन समान जस दसहू दिसान[११] में ।
धनिक कुबेर सम धिषना धिषण[१२] सम रूप रतिराज सम कर्ण सम दान में ।

---

१. लोमन ख २. पदारबंद ख ३. आनंदवृद ख ४. तसु ख ५. जैसे वीर समुइ मैं मुदित ख ६. सधु ख ७. ° ऐसी जैसी ···· विमलताई, ख प्रति में अनुपलब्ध ८. कबिदस ख ९. महृतबरय ख १०. पुनः क प्रति में अनुपलब्ध ११. विसान ख १२. धनिक क धिषान ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहि कविदास पुनि प्रभा को प्रकास जासु तैसें नहिं देष्यो नभ भासकर भान में।
सरल सुभाय महतावराय जू को सम[१] समता को नाहिं ताको दूसरो
जहान[२] में ॥२३॥

आगरा उडैसा[३] अजमेर औ अजीमावाद आरकाठ[४] इरां औ अरब्ब इरषंग में।
उत्तर आसाम[५] औ इलाहावाद[६] औंडछा हू[७] आजमगढ[८] अवधि[९] उजेन अरु अंग में।
अकबरनगर आंबेर अहमदाबाद इंद्रप्रस्थ[१०] ईमन जो अति ही तुरंग[११] में।
अमरनगर औ[१२] अलका अमरावती लौं नाम महतावराय जूं को आप बंग में ॥२४॥

बुधि-बल बस करि लीन्हें जू असेस नर साह नरनाहन सौं नेह अधिकायो हैं।
पूरब तपस्या को प्रकास[१३] कविदास जासु देषो अनायास हीते होत मनभायो है।
दिल्ली-पति जांको घर बैठे ही भिजाय दीन्ही षिलैत षिताब जगसेठ पद पायो है।
जगत जगतसेठ नाम महतावराय परम प्रभाय तबहीं ते कहवायो है ॥२५॥

दोहा

संतति, संपति, सुमति औ कीरति सुषमाँ भौन।
एक राय महताव जग ता सम दूजा कौन ॥२६॥

तिनके[१४] हेत रच्यों सरल भाषा-ग्रन्थ विचार।
निरषित सकल संगीत-मत लैकर सबको सार ॥२७॥

राग, ग्राम, सुर, मूर्छना, श्रुति, तालन को भेद।
कह्यो सकल संछेप[१५] ही पढ़त होय[१६] नहिं षेद ॥२८॥

मालबीय[१७] द्विज-कुल विमल शुक्ल यशोदानंद।
रागमाल यह नाम धर किन्हों गुरु पद बंद ॥२९॥

भाषा कविता मांह निज नाम धर्यो कविदास।
तातैं कवि कोविद सबैं करियो कृपा प्रकास ॥३०॥

बीति अठारह सै बरस अरू पँद्रह परिमान।
चैत्रशुक्ल नवमी रबौ[१८] भयो ग्रन्थ सुषदान ॥३१॥

---

१. ख प्रति में अनुपलब्ध २. जदामलै ख ३. उडैरू ख ४. आरकाव ख ५. असाँम क ६. इलादबाद ख ७. ओंडछं ख ८. आजिमगढ क ९. औधि क १०. इंद्रप्रस्प ख ११. तुरग ख १२. 'औ' ख में अनुपलब्ध १३. प्रकस, ख १४. तिकैं ख १५. संवप ख १६. होत ख १७. मालवीर्य ख १८. रच्यो ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ सुरग्राम मूर्छना श्रुति को बिचार[१]

दोहा

सुर सातै कविदास भनि तीन ग्राम परिमान ।
एक[२] बीस है मूर्छना श्रुति वाईस विधान ।।३२।।
तिनको लक्षन भेद क्रम अब वर्नत कविदास ।
सब सुजान मन कान दै सुनिये वचन विलास ।।३३।।

अथ सुर लक्षन

श्रुति[३] के पाछे होत है जो अनुरनन[४] प्रकास ।
रंजन सबके चित्त को सो स्वर कहि[५] कविदास ।।३४।।
अथवा जो आपै लसै अब परिपूरत नाद ।
ताहि कहत स्वर[६] नाम कवि जाके गिरा प्रसाद ।।३५।।

अथ स्वर नाम

षर्ज ऋषभ गंधार औ मध्यम पञ्चम नाम ।
धैवत और निषाद सो स्वर सातो सुषधाम ।।३६।।

अथ षर्ज स्वर लक्षन

कवित्त

षर्ज अहै षर अंस अपूरव देव विरंचि[७] विचार कह्यो है ।
अंग सबै सरसीरुह से अरु नाभि तैं याको उचार लह्यो है ।
जंबु सुदीपहि जासु निवास रु वासर पूषन कों उमह्यो है ।
जोषित जासु कहीं कविदास सुभैरव को पितुलोक चह्यो है ।।३७।।

अथ ऋषभ स्वर लक्षन

है गज अंस महारिषि[८] नारद पाटल अंग प्रभा सुविचारी ।
नाभि के उरध तैं लहिए सु उचार सुधाकर वार महारी ।

---

१. श्रुत के विवाद ख २. येक क ३. श्रात ख ४. अमुकरनन ख ५. क० ख प्रति ६. सुर ख ७. विरंच ख ८. महारिष क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीप पलक्षन वास[१] कह्यो कविदास त्रिया रि महानंदकारी ।
तात यही करनाटहि को स्वरतो ऋषभाद्वय लोक प्रचारी ।।३८।।

अथ गंधार स्वर लछनं

जानि गंधार कहै यह[२] अंस विरोचन देव कवीनि विचारे ।
लोहित स्याम सरीर प्रभा[३] पुनि पेट हि तें सु उचार उचारे ।
कौशिक दीप निवास कहै कविदास सुवासर भौम निहारे ।
राग हिंडोलहि को यह तात तिया इनकी "ग" सुअंग संवारे[४]।।३९।।

अथ मध्यम स्वर लक्षन

मध्यम कोकिल अंस लसै पुनि देव सुकेसव कोविद जानै ।
स्याम सरोज सरीर प्रभा वुधवार उचार महामन ठानै ।
क्रौंच सुदीपहि वास कह्यो कविदास पिता जु वसंत को मानै ।
अंग सिंगार कियैं वर नारि 'म' पंडित लोग[५] सबै पहिचानै ।।४०।।

अथ पंचम स्वर लक्षन

पंचम वायस अंग[६] उदार सुवासव देव तिहूँ पुर गायो ।
ग्रीवतें चारु[७] उचार कहै पुनि स्यामल देह सदा[८] मन भायो ।
साक सुदीपहि वास कहै कविदास बृहस्पतिवार[९] जनायो ।
मेंघमल्हार[१०] को तात को सुहात तिया इनकी 'प' महासुष पायो ।।४१।।

अथ धैवत स्वर लक्षन

मोरक अंस भयो सुर धैवत देव सदा शिवलोक वषानै ।
अंग प्रभा अवदात उचार सुआनन तैं सुनतैं हरषानै ।

---

१. पलत्ति निवास ख २. हृष ख ३. प्रन ख ४. सवारे ख में अप्राप्य ।
५. लेवक ख ६. अंस ख ७. चारि क चार ख ८. महा ख ९. देव ख
१०. मलार क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सालमलि दीपहि बास कहै कविदास सुवासर शुक्र सुहानै ।
तात यहै सिरीरामहि को अनुरागवती 'ध' तिया अनुमानै ॥४२॥

अथ निषाद स्वर लक्षन

दादुर अंस निषाद महागन[1] नायक देव गजाकृत धारी ।
स्यामल सेत दिपै तन दीपति ग्रीव तें ऊरध ध्यान उचारी[2] ।
पुहकरदीप निवास कह्यो कविदास सुवासर मंद विचारी ।
पुत्र नहीं इनके सुचरित्र रमै रति वांझ तिया 'नि' पियारी ॥४३॥

दोहा

वादि आदि वहुभेद है ताहि न जानत कोय ।
नहिं प्रचार संसार मैं तातैं कहै न सोय[3] ॥४४॥

इति सप्तस्वर

अथ ग्राम लक्षन

स्वर समूह अरु मूर्छना श्रुति को आश्रय धाम ।
कहि कविदास विचार चित[4] तासु नाम है ग्राम ॥४५॥

ग्राम[5] कहै पुनि तीन[6] विधि इक आडव सुष धांम ।
षाडव दूजौ जानियें पुनि संपूरन नाम[7] ॥४६॥

मिलै पाच स्वर गान जहँ ग्राम सु आडव जाँन ।
षट् स्वर सौ षाडव कह्यो सप्त संपूरन माँन ॥४७॥

संज्ञा[8] औरो तीन पुनि ग्रन्थनि कही विचार ।
उदरा मुद्रा तीसरी तारा विरल प्रचार ॥४८॥

अथ मूर्छना लछनँ

स्वर को तान चढ़ाइबो अरु उतारिबो होय ।
कहत मूर्छना ताहि पुनि कवि कोविद सव कोय ॥४९॥

---

१. मुनि ख २. उचीरी ख ३. नहि प्रचार·····कहै न सोय ॥ ख में अनुपलब्ध ४. चिता ख ५. म, ख प्रति ६. तिन क ७. मांन ख ८. संजा ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाम मूर्छनन के कहूँ जौंन सुरन की जौंन ।
संछेपहि कविदास अब होय सुनत सुष श्रौंन ॥५०॥

आमोदिनि[1] सुविनोदिनी[2] और प्रमोदिनी नाम ।
षर्ज मूर्छना तीन है जानहु सब सुष धाम ॥५१॥

दीर्घा एक बषानियें श्रद्धा[3] दूजी जान ।
व्यंगा तीजी मूर्छना रिषभ स्वरहि पहिचान ॥५२॥

आनंदी आलापियौ कही प्रलापी पींन ।
कहि कविदास गंधार की अनीं मूर्छना तीन[4] ॥५३॥

विश्रामनी अरु कामिनी आरामनि ए तीन।
मध्यम स्वर की मूर्छना कहि कविदास प्रबीन ॥५४॥

कही कोमली निर्मली[5] औ जमली सुषदान ।
पंचम की ए मूर्छना कहि कबिदास सुजान ॥५५॥

आधारिनि[6] सुविहारिनी[7] पुनि बिस्तारनि होय ।
धैवत स्वर की मूर्छना कहै सयाने लोय ॥५६॥

लज्जा संकोची बहुरि गोपी तीसरी जान ।
स्वर निषाद की मूर्छनाँ कहि कविदास[8] सुजान ॥५७॥

सातो स्वर की मूर्छनाँ ऐसैं कही बिचार ।
तीन तीन स्वर प्रति सबै गनि इक बीस उदार ॥५८॥

इति मूर्छना भेद

अथ श्रुति को लक्षन

नाद विना पहिलै सुनै सबको सुषद सरुप ।
श्रुति ताही कवि कहत हैं जिनकी मतहि अनूप ॥५९॥

सातौ स्वर की श्रुति कही सब बाइस बिचार ।
भिन्न भिन्न तिनके सकल नाम भेद उर धार ॥६०॥

---

१. अमोदनि क २. सुबिनोदनि क एवं ख प्रति ३. सध्य ख ४. आनंदी आलापियौ·········मूर्छनातीन॥ ख में अनुपलब्ध ५. निर्म ख ६. आधारन ख ७. विहारनी ख ८. कबिदा ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ स्वर प्रतिश्रुति को नाम

तीव्रा और कुमुद्वती[१] मंदा तीजी जानि ।
छंदवती ए[२] षर्ज कवि श्रुति चार वषानि ॥६१॥

दयावती औ रंजनी रक्ता तीजी होई ।
तीन रिषभ स्वर[३] श्रुति कही कवि कोविद सव कोई ॥६२॥

रौद्री प्रथमहिं दूसरी क्रोधा कही[४] वषान[५] ।
द्वै ही श्रुति गंधार की ग्रंथनि लिष्यों प्रमान ॥६३॥

वज्रा और प्रसारिनी तीजी प्रीति विचारि ।
चौथी कहि कवि मार्जनी श्रुति मध्यम की चारि ॥६४॥

छिति रक्ता संदीपिनी[६] आलापिन ए चारि ।
पंचम स्वर की श्रुति सकल कहि कविदास सुधारि ॥६५॥

प्रथम मंदती रोहिनी रम्या[७] तीजी जान[८] ।
धैवत स्वर की श्रुति यहै कहि कविदास प्रमान ॥६६॥

उग्रा पहिली छोहिनी[९] दूजी[१०] देत[११] वताय ।
स्वर निषाद की श्रुति यहै कहि कविदास वनाय ॥६७॥

इति श्रुति भेद ॥

अथ त्रिबिधि रागजाति बिचार

कवित्त

तीन जाति[१२] राग सव वरनै प्रथम सुद्ध दूसरो सुषद स्वर सालंक विचारिये ।
तीसरो संकीरन[१३] सरस कविदास भनि भेद इन[१४] तीनो के विमल[१५] उर धारिये ।
भाति[१६] द्वै द्वै होत ऐसैं सुद्ध और महासुद्ध स्वर राग सालंक द्वै नाम यौं उचारिये ।
येक है संकीरन औ महासंकीरन[१७] भेद षड़[१८] विधि सकल ऐ जगत प्रचारिये ॥६८॥

---

१. कुमुद्वीती क २. ऐ क ३. स्व ख ४. कहू ख ५. विपानि ख ६. संपीदंनी ख ७. स्थ ख प्रति ८. जानि क ९. छंहना ख १०. दूती ख ११. दे ख प्रति १२. जात ख १३. सेंकीरन ख १४. इ ख १५. दिमल ख १६. नांति ख १७. मसंकारन ख १८. षवु ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ सुद्ध लछन

दोहा

प्रकृत[१] रूप रंग सव कछू भिन्न होय पुनि जासु[२] ।
कहूं विकृत[३] स्वर सौं मिलै सुद्ध नाम[४] है तासु[५] ॥६९॥

अथ विकृत लछन

सोई जानो विकृत स्वर और ठौर ते आय ।
औरन के अस्थान मै जो दुरि दुरि मिलि जाय ॥७०॥
सुद्ध गूजरी जानिये अरु टोडी कविदास ।
इन सिवाय नहि[६] और है पंडित कह्यो प्रकास ॥७१॥

अथ महासुद्ध

जामै मिलै न विकृत स्वर पूरन आपहि होय ।
कहिये सारंग कान्हरा महासुद्ध ये दोय ॥७२॥
जानौ स्वर सालंक को भेद सुद्ध कौ एक[७] ।
मिलै प्रकृति[८] स्वर होत है दोउ परम विबेक ॥७३॥

अथ राग सालंक[९] लछनं

और रंग छाया मिलै और ठौर[१०] ते आय ।
ताहि राग सालंक कहि वरनत कवि सुषदाय ॥७४॥

कवित्त यथा

गौरी राग[११] सीरी राग दीपक पलासी राग[१२] मेघ सो मलार राग[१३] ललित विभास है ।
ललित वसंत राग[१४] सोरठ है सूहो राग तैसहि केदार राग[१५] सूहो सुषरास है ।
धनासरी सो भैरव भैरो राग[१६] सूही जान काफी राग कान्हरा विलावल प्रकास है ।
गौरी राग[१७] गौड़[१८] देश कारलौ वरारी पुनि रेवा राग[१९] गूजरी तो कहि कविदास है ॥७५॥

---

१. प्रति ख २. जासः ख ३. विवृत ख ४. °नांस ख ५. नास ख ६. न, क प्रति ७. क को भेद सुद्ध को एक ख में अनुपलब्ध ८. मिलै प्रकृति ख में अनुपलब्ध ९. सालंग ख १०. बौर ख ११, १२, १३, १४, १५, १६, एवं १७ में रंग क प्रति १८. गौढ़ क गौढ ख १९. रंग क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा

इतने हीं ग्रन्थनि निरषि कहे राग सालंक ।
अब संकीरन भेद द्वै बरनत हौ निरसंक ।।७६।।
लघु संकीरन पांच है यह लक्षन है तास ।
दुविधि सुद्ध मिलि होत है बरनत द्विज कबिदास ।।७७।।

कवित्त यथा[१]

टोडी मिलि कान्हरा[२] सो भैरो राग होत पुनि गौरी कान्हरा[३] मिलि कन्हर[४] गौरी जानिये ।
कान्हरा[५] केदारा मिलि होत है वसंत राग सारंग मल्हार मिलि सावंत बषानिये ।
मिलि के मल्हार अरु कान्हरा सरस होत कन्हर[६] मलार नाम जग सुषदानिये ।
कहि कविदास सबिलास ऐईं[७] पांच राग लघु संकीरन में संगीत ग्रन्थ मानिये[८] ।।७८।।

अथ महासंकीरन[९] भेद लछनं

दोहा

महासंकीरन तीन हैं इक सुरसा[१०] है नाम ।
कहत[११] सारदा[१२] दूसरो सरसाती जो दाम ।।७९।।
लघु गुरु के पुनि भेद सों भयो नाम षट तास ।
लक्षन सहित उदाहरन अब बरनत कबिदास ।।८०।।
स्वर सालंक रू सुद्ध के मिलै भेद यह जान ।
लघु स्वरसा कविदास भनि पाच राग तहां गान ।।८१।।

कवित्त यथा[१३]

कान्हरा औ सोरठ[१४] मिलाप तें अडाना[१५] होत गौरी और गूजरी तें पूरबी प्रधान है।
होत है बरारी नाम टोडी[१६] औ धनासरी तें होत गौर सारंग गौर सारंग मिलान है

---

१. यथा ख में अनुपलब्ध २. न्हरा ख ३. कन्हरा ख ४. कान्हर ख ५. कन्हरा ख ६. कन्दर ख ७. पई ख ८. नाजियै ख ९. संकीरन से ख १०. सुरीसा ख ११. कदत ख १२. सारसा ख १३. यथा ख में अनुपलब्ध १४. सोरव ख १५. आझाना ख १६. टोझी ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौरी और काफी के मिलैतें होत रेवा नाम लघु स्वरसा[१] को यह पांच ही प्रमान है।
ग्रंथनि पुरातन[२] निरषि नीकी भांतिन सों कहि कविदास ऐसे परम सुजान है।।८२।।

अथ गुरु स्वरसा भेद

देसी और गूजरी मिलि रामकरीं[३] होत पुनि गूजरी औ मालवा तैं गुनकरी जानिये।
धनासिरी कान्हरा तैं होत है रिषभ राग नट मिलि कान्हरा तैं कन्हरनट मानिये।
गौरी षटराग मिलि देसी होत कविदास सारंग विलावल तें पुरिया प्रमानिये[४]।
सिरी राग सारंग[५] तें दीपक भयो है नाम जैतसिरी गौरी मिलैं चैती पहिचानिये।।८३।।
काफी मिल कान्हरा सें सुषद सहाना नाम इमन किदारा मिलैं इमनकिदार है।
मारू औ किदारा मिलि होत है विहागरा तौ सारंग औ पूरवी ते देवगिरी चारु है।
सारंग अरु नाट के मिलै तैं सारंगनाट नाम सुषधाम जग करत उचार है।
गुरु स्वरसा के भेद इतने अमल मति कहि कविदास वहु ग्रंथनि विचार है ।।८४।।

अथ लघु गुरु[६] सरसा लछनं

दोहा

मिलै द्विविधि सालंक जहँ लघु सारस है सोय।
मिलि सालंक संकीरनहि गुरु सारस पुनि होय ।।८५।।
मिलि श्रीराग[७]धनासिरी राग विषहरा होय।
येक भेद है सारसा कहैं सयाने लोय ।।८६।।

अथ गुरु सारसा भेद

कवित्त

जैतसिरी धनासिरी मिलिके कल्यान होत होत है भुपाली त्यों विलावल कल्यान तैं।
*देसकार[८] पूरबी के मिले तैं मालवा जान औ बसंत ललित बरारी के मिलान तैं।

---

१. स्वरकासा ख २. पुरतन ख ३. रामकली ख ४. पुरिया प्रमानिये ख में अनुपलब्ध ५. सिरीराग सारंग तें ख में अनुपलब्ध ६. गुरु ख में अनुपलब्ध ७. श्रीरांम क * क प्रति का द्वितीय चरण ख प्रति में चतुर्थ चरण के स्थान पर है एवं चतुर्थ द्वितीय के स्थान पर।८. देसकाल क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंचम ललित मिलि ललितपंचमी होत मालसिरी धनासिरी भैरव के गान तैं ।
मालसिरी मेघ मिलि होत मधुमाध पुनि सिंधुरा मिलैं तैं मारू सोरठ[१] की
तान तैं ॥८७॥

गौड[२] औ विलावल तै होत है कामोद मिलि पूरिया धनासिरी[३] भीमपलासी
गानिये ।
लीलावती होत मिलि जैतसिरी देसकार संकरा विभास मिलि जैतसिरी[४]जानिये ।
सरस सहाना औ विलावल मिलाप ही तें रागनी प्रसिद्ध सुघराई यौ
वषानियें ।
ऐइ गुरु सारसा में राग अनुराग ही सौ जगत प्रकास कविदास मन
आनिये ॥८८॥

अथ लघु सारसा भेद

अजैपाल[५] पूरिया सौ कौसिक कहत नाम ऋषभ[६] वरारी मिलि धौल अनुमानिये ।
पंचम[७] प्रसिद्ध त्यों हिंडोल औ वसंत मिल कौसिकै औ मालवी तें मालकौस मानिये[८]।
होत है रंभेली रामकरी औ भुपाली मिल अजैपाल धौल मिलि पूरिया प्रमानिये[९] ।
मिलि कै विहागरा औ मालसिरी रागिनी तौ षंभावती नाम सव जगत प्रमानिये ॥८९॥

मिलेतें गंधार अरु देवकली रागनी के गौड़ होत स्याम राम रामकरी स्याम तें ।
होत है वंगाल पुनि भैरव वरारी मिलि त्यों हि भठियाल रामकरी बंग नाम तें ।
जैतसिरी कल्यान के मिले ते होत राग यह जैतकल्यान पुनि तान अभिराम तें ।
रिषभ गंधार मिल होत है अजैपाल कहै कविदास सविलास ग्रंथ ग्राम तें ॥९०॥

बंगाली षट्राग के मिलैं तें होत सुद्ध नाम मिलिके हमीर सुद्ध छायारुप गानिये ।
सुद्ध अरु नाट के मिले ते होत सुद्धनाट छाया अरुनाट मिलि छायानाट जानिये ।
होत हैं हमीरनाट नाट औ हमीर मिल नाट औ कमोद कमोदनाट मानिये ।
संकराभरन सुद्ध पूरबी ये तीनों मिल रागनी ककुभ कविदास चित्त आनिये ॥९१॥

धौल अरु टंक मिल सोहनी सरस रूप लीलावती त्रिबेनी ते सकोची नाम पायो है
चैतीं औ वसंत मिलि होत है वसंती नाम नट औ मल्हार तें नट-मल्हारी गायो है ।

---

१. सोरव ख २. गौढ क ३. धनसिरी ख ४. देसकार ... जैतसिरी ख में अनुपलब्ध ५. अजैवाल ख ६. रिषभ ख ७. पंचम ख ८. कौसिक ... मानिये ख में अनुपलब्ध. ९. रंभेली ... प्रमानिये ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतने में प्रसिद्ध राग सुमति विचार लघु सरसा में सरस कवि लोगन बतायो है ।
चुनि चुनि इक ठौर कविवर द्विज कविदास सकल कवित्त बंध भेद सो वनायो है ॥९२॥

अथ गुरु सारसा भेद

भैरव ललित अरु लीलावती तीनो मिल होत है हिंडोल राग सुनि सुषदाई है ।
जैतसिरी नट सुद्ध मिल कै सरस्वती औ कान्हरा श्रीराग गौरी जाजवंती गाई है ।
पंचम बंगाल रेवा मिलकै परज होत सिंधुरा मल्हार टोड़ी असावरी सुनाई है ।
देसकार गूजरी कल्यान के मिलै ते पुनि रागनी अहीरी कविदास मन भाई है[1] ॥९३॥

ललित बंगाल औ अजैपाल राग मिल होत हैं सुषद[2] स्याम नाम सुभ राग है ।
सारंग[3] विलावल औ गौड़ के मिलै ते होत वेलावली नाम जाको सुनत सभाग है ।
कान्हरा मलार औ संकराभरन मिल होत है देसाष जासों मोहै मृगनाग है ।
तिलक कमोद ताहि कहि कविदास जामैं कान्हरा कमोद षटराग सुर लाग है ॥९४॥

सिरीराग[4] कान्हराऔ भैरव मिलै ते होत टंकराग[5] नाम सुनै परम सुहावनो ।
देसकार गौरी औ ललित मिलाप ही ते होत है त्रिवेनी जाको रूप मन भावनो ।
इमन किदारा औ सहाना के मिलत पुनि होत है हमीर जाको छाया मुषगावनो ।
भैरोनट देवगिरी मिलकै सुअष्टी होत कहै कविदास केल[6] रस सरसावनो ॥९५॥

कान्हरा ईमन और धनासिरी तीनो मिलै वागेस्वर होत जाने अति वांकी तान है ।
नट और दीपिका[7] हिंडोल मिल होत है जू मध्यमा प्रसिद्ध जाको गावत सुजान है ।
सिंधुरा असावरी औ धनासिरी टोडी मिल होत है गंधार[8] नाम जगत[9] प्रधान है ।
कान्हरा मल्हार सुघराई सूही मिलै होत[10] सूहो जाहि गावै कविदास मनमान है ॥९६॥

पूरबीमलार गौरी देसकार मिलै होत मांझ जाको गावत सुघर रसलीन है ।
ललित वरारी स्याम गूजरी गंधार औ असावरी मिलै ते षटराग सुरचीन्ह[11] है ।
सुद्ध मधुमाध नाट पूरिया वागेश्वरी औ नट मिल होत नाट तानन रंगीन है ।
भेद ये संकीरन में गुरु स्वरसा के एई कहै सविलास कविदास[12] परवीन है ॥९७॥

---

१. कवित्त संख्या ९७, ९१, ९२ एवं ९३ ख प्रति में अनुपलब्ध। २. ललित बंगाल ······ होत है सुषद ख प्रति में अनुपलब्ध। ३. सारंग ख में अनुपलब्ध ४. सिर ख ५. कान्हरा औ ········ टंकराग ख प्रति में अनुपलब्ध ६. बोल ख ७. दीपका क ८. संधार ख ९. गत ख १०. हेत ख ११. चीन क १२. किविसास ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा

दुविधि सुद्ध सालंक अरु संकीरन परकास ।
निरषि ग्रन्थ संगीत के बरने द्विज कविदास ॥९८॥

इति रागजाति[1] सुद्धसालंक संकींरन भेद संपूर्ण ॥

अथ राग लछनं

दोहा

स्वर बर्नन तैं सहित जो ध्वनि बिशेष कविदास ।
मन रंजन सब जनन को राग नाम है तास ॥९९॥

अथ रागोत्पत्ति

शिव[2] अरु शक्ति[3] संयोग ते षडविधि राग प्रधान ।
पांच वदन ते पांच है एक[4] शिवा[5] मुष जान ॥१००॥
भैरव भयो[6] अघोर तें मेघराग ईशान ।
उपज्यो सद्योजात तें सिरी-राग सुषदान ॥१०१॥
बामदेव मुष तें भयो सरस बसंत सभाग[7] ।
कारनाट ततपुरुष तें शिव मुष निकसे राग ॥१०२॥
छठयौ[8] राग हिंडोल भौ गिरिजा वदन प्रकास ।
रागन की उत्पत्ति इमि बरनत[9] है कविदास ॥१०३॥

अथ राग नाम

भैरव मेघमलार पुनि कवि बर्नत श्रीराम ।
पुनि बसंत करनाट औ ये हिंडोल[10] षट राग ॥१०४॥
राग रागनी भेद अब सुत सुत-बधू समेत ।
सषा-सषी संजुक्त पुनि कहि कविदास सचेत[11] ॥१०५॥

---

१. जात ख २. सिव क ३. सक्ति क ४. ऐक क ५. सिवा क ६. भैवरवसुयो ख ७. भा ख प्रति ८. छवयो ख ९. बरत ख १०. हिंझोल ख ११. सवेत ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागन को अरु ताल[१] को काहु न पायो पार ।
हनुमदादि[२] मतभेद वहु लिषत होय विस्तार ॥१०६॥
तातें सुमत विचार चित[३] सव ग्रन्थन को सार ।
लक्षन सहित उदाहरन वर्नत विविध प्रकार ॥१०७॥

कवित्त

राग षट जानो पुनि रागनी[४] छतीस मानो एक एक[५] रागन के पुत्र[६] षट जानिये ॥
तैसे ही तनय-वधू षट षट रागन की एकर[७] सषा औ सषी एक[८] [पुनि] मानिये ।
एक[९] को समाज इक बीस कविदास भनि[१०] एक[११] सै छवीस[१२] सव भेद मन[१३] आनिये ।
रुद्र अरु नारद प्रभृत मत बूझि बूझि कहत वचन ऐसे पंडित प्रमानिये ॥१०८॥

अथ भैरव[१४] समाज कवित्त

रामकरी मालसरी धनासरी सिंधुरा औ भैरवी[१५] असावरी ये भारजा वषानी है ।
धौल स्याम सुद्ध और मालकौस अजैपाल[१६] छठयौ[१७] कन्हरनट सुत सुषदानी है ।
रेवा[१८] औ रँभेली सूही सूहो[१९] भठियाल पुनि अष्टी ए तो पुत्र-वधू सब जग जानी है ।
ऋषभ[२०] सषा है एक सोहनी सहेली यह भैरव को भेद कविदास रसवानी है ॥१०९॥

अथ मेघ-समाज[२१] कवित्त

कान्हरा किदारा और पूरबी विलावली माधवी औ गौडी[२२] षट रागनी सुहाई है ।
छायानाट सुद्ध सुद्ध-नाट गौड औ हमीरनाट सावंत अडाना[२३] षट सुत सुषदाई है ।
जैतसिरी जोगिया पूरिया ईमन और देसी राजविजै पुत्रवधू मन भाई है ।
गौरा नाम सषा नट-मल्हारी सी सहेली यौं मेघ भेद उक्त कविदास मन आई है ॥११०॥

---

१. तालु ख २. दनुमदादि ख ३. वित ख ४. रीगिनी ख ५. ऐक ऐक क ६. पुसु ख ७. एक ख ८. ऐक क ९. ऐक क १०. सभि ख ११. ऐक क १२. छतीस ख १३. मन ख प्रति में अनुपलब्ध । १४. नैरव ख १५. भैरवरी ख १६. अजैज्याल ख १७. छत्रयो ख १८. रवा ख १९. सूहा क २०. रिषभ क २१. सभान ख २२. कोझा ख २३. अझाना ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्रीराग को समाज कवित्त

यथा[१]

सुभगा गंधारी गौरी भारजा कुमारी और रुचिर[२] विलावरी विरागी षट जानिये ।
जयत-कल्यान षटराग स्याम-राम पुनि वागेस्वरी हेम षेम-कल्यान सुत मानिये ।
देवकली[३] मांझ गौंड सारंग सरस्वती औ परज जाजवंती पुत्रवधू पहिचानिये[४] ।
पंचम सषा है औ सषी तौ है सँकोची नाम भेद कविदास ये श्रीराग के वषानिये ।।१११।।

अथ बसंत-समाज कवित्त

यथा[५]

ललित-विभास पटमंजरी औ पंचमी पुनि गूजरी सुषद टोडी रागनी लसत है ।
दीपक देसाष औ विहागहू सहाना-सुत सारंग अहीर-नाट[६] सुष सरसत है ।
सोरठ[७] देवगिरी बंगाली औ त्रिवेनी गुनकरी षंभावती पुत्र-वधू परसत है ।
सषा है कल्यान-नाट[८] सारंग सहेली भेद-सहित[९] वसंत कविदास दरसत है[१०]।।११२।।

अथ कारनाट[११] समाज कवित्त

यथा[१२]

गौरी[१३] औ भुपाली-नट कहत कल्यान चौथी[१४] पाँचई कमोद औ षँभेली तिय जानिये ।
मारु बहुनागर औ टंकराग[१५] सागर है लंक-दहन[१६] गौर मालव-सुत गानिये ।
ककुभ[१७] अहेरी स्याम-पूरिया समरफली अहिल्या औ बृन्दावनी सुतवधू मानिये ।
सषा है पषार ललित पंचमी सषी पुनि कारनाट भेद कविदास मन आनिये ।।११३।।

---

१. यथा क में अनुपलब्ध २. चरुचिर ख ३. देवगिरी ख ४. पदिवानिये ख ५. यथा क में अनुपलब्ध ६. नाट क प्रति में अनुपलब्ध ७. सोरव ख ८. कल्यरननड ख ९. सदिव ख १०. कविदास दरसत है ख में अनुपलब्ध ११. कारनटक ख १२. यथा ख प्रति में अनुपलब्ध। १३. गारा ख १४. चोधी ख १५. टंकराज क १६. लंकदन १७. ककुत्त ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ हिंडोल समाज कवित्त

यथा[१]

संकराभरन येक संमतविलास दूजो तीसरो तिलककमोद मन मोदकारी है।
कहत किदारनाट पांचयौ कमोदनाट छठयौ[२] सक्रौन-सुत ऐसे नामधारी है।
चैती सुघराई और काफी लीलावती पुनि पांचई सुचारु हरसिंगार अति प्यारी है।
नायकी सहित ये हिंडोल राग पुत्र-वधू द्विज कविदास सविलास यौं विचारी है[३]।।११४।।
दीपै येक दीपिका औ देसकार दूजी पुनि वरन वरारी वरनारी उमहत है।
मालवी मनोजमई पाहिडा[४] सरस प्रेम छठी[५] मरहठी गाय आनंद लहत है।
रागनी कही है ऐसैं सषा वड हंस येक[६] कोविद सहेली भीमपलासी चहति[७] है।
सुषद हिंडोल[८] राग भेद द्वै कवित्तन में जगत प्रकास कविदास[९] जू कहत है।।११५।।

———

१. यथा क में अनुपलब्ध २. छवयौ ख ३. विवारी ख ४. पाहिझा ख ५. छद्वी ख ६. एव ख ७. वहत ख ८. हिंदेल ख ९. कचदास ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ रागरागनी को उदाहरन तत्रादौ भैरव राग लक्षनं

दोहा

गंगाधर विधुभाल उर मुंडमाल गज-पाल।
कर त्रिसूल त्रिनयन[1] वरन भैरव भूषित ब्याल[2] ।।११६।।

कवित्त यथा

सोहै वाल इंदु भाल लोचन विसाल तीन गरै मुंडमाल गज-षाल परिधान री।
जटाजूट सोहै गंग भूषित भुजंग अंग अंगराग अगर-भसम अनुमान री।
चूमत कपोल निज कामिनी को अंक लियै कुंडल विलोल झलकत जुग कान री।
देख्यौ वड़े[3] भोर आज अद्भुत छवि रंगलाल मंगल निधान राग भैरव समान री।।११७।।

अथ भैरवस्य षट रागन्यः तत्र प्रथम भैरवी लक्षन

दोहा

गिरि कैलास महेस को पूजन जात प्रकास।
कर लै माल सषी सहित नाम भैरवी तास ।।११८।।

कवित्त यथा

सुंदर सरूप छवि वदन मयंक हू तै विमल प्रकास द्युति प्रति अंग अंग में।
विंव से अधर लाल अधिक रसाल पुनि मृग से चपल चष मधुर सरंग में।
पहिरे दुकूल रंगलाल फूल-माल कर कोकिल वचन चुभि[4] रही है अनंग में।
वड़े[5] भोर भैरवी[6] सी संकर के पूजिवे को कामिनी चली है लयें हित सषी संग में।।११९।।

---

१. त्रिनयभ ख २. व्यल ख ३. बड़े ख ४. वुभि ख ५. बड़े ख ६. सैरवी ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ धनाश्री लक्षन

दोहा

ह्रिय पिय ध्यान रु स्याम तन नील कमल धरि कान ।
धनासिरी डोलति[1] फिरति वसन सुतड़ित समान ।।१२०।।

यथा

कानन[2] में करनफूल नीलकंज सोहै चारु पहिरे दुकूल दिव्य तड़ित समान है ।
जलद वरन[3] अंग उरज उतंग अति कुंकुम कलित कुच कंचुकी प्रमान है ।
केहरि[4] लौं कटि छीन मीन से जुगल नैन ईषत सहास[5] मुष चंद अनुमान है ।
डोलति धनासिरी सी रंगलाल प्रेम पगी पूरव अहनि[6] दिन धरै प्रति[7] ध्यान है ।।१२१।।

अथ रामकरी लक्षन

दोहा

पायन पर कर जोर जुग प्रीतम करि अनुहारी ।
रामकरी मानत नही गरबीली सुकुमारी ।।१२२।।

यथा

सुंदरि नवेली अलबेली अति रोम[8] भरी नवल किशोरी[9] पिय सापराध जानिकै ।
बैठी[10] पलिक पर[11] मुष मोरि[12] नासिका मरोरि नीलपट घूंघट मैं भौंहै धनु तानिकै ।
पाय परि प्यारे रंगलाल जू निहोरि हारे तउ न निहारे नैक संक उर आनिकै ।
ऐरी[13] तू अनोषी रामकरी सी गुमान भरी भोर ही लौं रही गुरु मानहठ[14]
ठानिकै[15] ।।१२३।।

अथ मालसिरी लक्षन

दोहा

कुसुम रचित भूपन पहिरि[16] विहरत पिय के संग ।
मालसिरी नव योवना हसतहि सहित अनंग ।।१२४।।

---

१. झोलत ख २. कामनमैं ख ३. 'व' ख ४. केहर ख ५. समास ख ६. अह्न ख ७. प्रति ख ८. रोस ख ९. किसेरी ख १०. बैबि ख ११. पलिका पैं क १२. मोर ख १३. परी ख १४. हव ख १५. वानि ख १६. पहरि क, पहर ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

चंदहू तै उज्जल वदन छवि छाजत[१] है तैसी ऐ जुन्हाई सी निकाई प्रति अंग मैं ।
कमल वरन तन वसन पहिरि नीको कानन कमल दीन्ह रहै रस रंग मैं ।
फूलन को भांति भांति भूषन वनाय चारु चंदन चढाय उर[२] उरज उतंग[३] मैं ।
कुसुम धनुष सर धरै मालसिरी मिस करत कलोल रंगलाल पिय संग मै ।।१२५।।

अथ असावरी लक्षन

दोहा

पुष्पवाटिका[४] में सुघर लैकर कमल अनूप ।
मुदित फिरै निरखत सकल कहि असावरी रूप ।।१२६।।

यथा

फुल्लित जवाप्रसून अरुण नव[५] वरन तन जगर मगर जोति दीप की जुन्हाई[६] सी ।
अंबुज से लोचन विसाल उर मोती माल उरज उतंग रति रंग मन भाई सी ।
विकच कमल कर कंज लै कमल[७] मुषी फिरत रहत वन प्रीतम लुभाई सी ।
देषी आज रंगलाल छोहरी असावरी सी रति की निकाई काम तन छवि[८] छाई सी
।।१२७।।

अथ सिंधुरा लक्षन

दोहा

नीलम मनी सी गात दुति विधु सो वदन[९] प्रकास ।
बीना कर लै सिंधुरा गावत पिय के पास ।।१२८।।

यथा

देषी मैं अनूप छवि सांवरी सलोनी नारि इंदु सो वदन दृग अंबुज सुहावनो ।
कुंतल बिसाल तन भूषित विचित्र मनि वचन रसाल रंगलाल रस प्यावनो[१०] ।

---

१. छजत ख २. उर ख में अनुपलब्ध ३. जुतंग ख ४. बाटका ख ५. नव ख में अनुपलब्ध ६. जुन्हा ख ७. कल क ८. छाव ख ९. बद ख १०. प्यानो क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कंचन वरन चीर अँचरनि[१] जगमगात भूरि हाव[२] भाव मनभावन लुभावनो ।
हौं तो वलिहारी सिंधुराहू डारौ वारि-वारि प्रीतम समीप लषि बीना को वजावनो ॥
॥१२९॥

इति भैरव रागन्यः ॥

अथ भैरवस्य षट् पुत्राः । प्रथम धौल[३] लछनं

दोहा

सुघर बैठि[४] सीसा महल निरषत नाच अनूप ।
धौल नाम इह राग को कुंदन सो तन रूप ॥१३०॥

यथा

सीसा के महल महाजान परबीन बीन बैठि[५] के वजावत अरु गावत सुघर तान ।
नवल कमल रंग कुंदन तें सरस अंग लसत अनंग छवि छाजत अधर पान ।
नाचै[६] वरनारी आछी रूप गुन वारी प्यारी लेति गति न्यारी न्यारी सकल कला निधान ।
होत है निहाल रंगलाल पिय देषि देषि धौल राग ऐसो आज राजत है रूप षान ॥१३१॥

अथ स्याम लक्षन

दोहा

निज प्यारी को साथ[७] लै विहरत कुंजनि धाम ।
कंदुक क्रीडा करति पुनि राग लसति यह स्याम ॥१३२॥

यथा

एक कर पानदान पन्ना के विराजमान एकन की ग्रीव गहि पान सो भिरति है ।
कुंद के वनाय आछै[८] कंदुक[९] करन फेकै एक के कठोर[१०] कुच उपर गिरति है ।

---

१. आंचर क २. दाव ख ३. ध्यैल ख ४. बैव ख ५. गैवि ख ६. नावै ख
७. कौसध ख ८. अछ ख ९. कंडक ख १०. कवो ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक तें वचन विलास कविदास सुनि छल सों छबीले कछु आपहूँ चिरति है।
लीन्हे संग प्यारी रंगलाल पिय रुप वारी स्याम संग[१] वारी में विहरति फिरति है ॥१३३॥

अथ सुद्ध लछन

दोहा

सुनत राग रंग-महल में सरसत सुष[२] अंग अंग।
रीझ देत तन आभरन सुद्ध कहै इहि रंग ॥१३४॥

यथा

गावत कलावत प्रबीन कर बीन धर मुरज वजावत वजैया जे मृदंग के।
ताल भर तान देत मान[३] ठहराय[४] लेत लय के समान सुर सोहत[५] मुचंग के।
कहि कविदास यह भांति सों विलास करै रीझ देत आभरन आछे अंग अंग के।
रंगलाल प्यारे रंगमहल रंगीले राग[६] सुद्धलौं सुनत वास पैन्हें रंग-रंग के ॥१३५॥

अथ मालकौस लछन

दोहा

रिपु-कपाल की माल उर पहिरै प्रवल प्रताप।
बीरन सहित विराजई मालकौस पुनि आप ॥१३६॥

यथा

समर विलोकत हीं लोकपाल ऐसो[७] रूप[८] हर्पित[९] सकल अंग वीर रस छायो है।
इंदु सो वदन सेतो अरुन समान भयो लैकर[१०] कमान तान वानन चलायो है।
बीरन सहित धाय बैरिअन[११] के सीस काट मुंडन[१२] की माल उर आप ही वनायो है।
कहि कविदास आज मालकौस राग[१३] संग रंगलाल प्यारो वीर बीर मन भायो[१४] है॥
॥१३७॥

---

१. सम ख २. सुध ख ३. सांन ख ४ वहराय लेम ख ५. सोहन ख ६. रा ख ७. अैसौ ख ८. रूर्ष ख ९. हर्पत ख १०. करि ख ११. वैरनि ख १२. मुंझन ख १३. मुंझन ख १४. भयो ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ अजैपाल लछन

दोहा

केलि-भवन में बैठि[1] के निज प्यारी लै साथ।
अजैपाल मदिरा पियै तियहि पियावै हाथ ॥१३८॥

यथा

कानन विराजै गजमोती उर[2] मोती[3] हार सुंदर सुधारि सीस चीरा जरकसी[4] है।
भूषन वसन और अंगनि अनेक भांति गात जलजात ऐसी दुति आनि वसी है।
कहि कविदास बैठि[5] मंदिर विलास ही के पास[6] ही पियारी बैठी अति रसमसी है।
निज कर ढारि कै पियावै मद रंगलाल अजैपाल राग लौं विराजै मुष ससी[7] है ॥१३९॥

अथ कन्हरनट लछन

दोहा

चढ़ि[8] वाजी ताजी विमल लै कर वाज उदार।
कन्हरनाट यह राग है षेलत फिरत सिकार ॥१४०॥

यथा

ताजी वर वाजी[9] पै सवार कर लीन्हें वाज[10] छोड़त[11] तहां ई जहां विविधि विहंग है।
लपट झपट सिकरान की निरषि आप लै लै ललकारैं नर सहित उमंग है।
परम उदार ऐसे मृगया[12] विहार करि देत उर हार ताहि जेते[13] इति अंग है।
राजत कन्हरनट कैधों रंगलाल पिय कटि करवाल सर-पूरित निषंग है ॥१४१॥

इति भैरव-पुत्राः[14] ॥

अथ भैरव पुत्रबधू

दोहा

वन विहार कंदुक[15] विरच पिय सो षेलत षेलि।
चोट लगै सतरात[16] कछु रेवा सहित सहेलि ॥१४२॥

---

१. बैक, बैवि ख २. ख में अनुपलब्ध ३. सोती ख ४. नरकसी ख ५. बैत्री ख ६. स ख ७. सस ख ८. वढ़ी ख ९. बाज ख १०. वाजै ख ११. छेडत ख १२. मृगय ख १३. जेजे ख १४. भेद संपूर्ण क प्रति में अनुपलब्ध १५. कंपुक ख १६. सतत ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

झलकत झीने चीर झलक अंग अंगनिकी किलक कलोल कर[1] कनकलता[2] सी है।
कोमल करन-फूल चुन-चुन चंदमुषी चाय सो रचत गेंदु सोहै मैनका सी है।
सरस परसपर षेलैं गेंदु ष्याल कर देषि उर उरज उचाई चकिता सी है।
रेवासी रसीली रंगलाल जू की वाल मन सोचत सी चोट लगै भूली हिय हांसी है ।।१४३।।

अथ स्यामबधू रंभेली लछन

दोहा

रति-मंदिर में सुंदरी बैठी पिय के पास ।
पिय छेडे हा हा करत नाम रंभेली तास ।।१४४।।

यथा

सरस फरस पर आसन लसत येक प्यारो वतरात इतरात जात प्यारी है।
सैनन कहत अव सैन करो प्यारेलाल ष्याल यह छोडो छैला जात वलिहारी है।
ऐसें में अनंग[3] वस[4] रंगलाल अंगिया के बंद लागें छोरन छुप्यो चाहै [वर] नारी[5] है।
जोवन गहेली दृग देषि गरबीली अलि बाल अलबेली में रंभेली सी निहारी है[6]।। ।।१४५।।

अथ सुद्धबधू सूही लक्षन

दोहा

अलिन साथ षेलत हुती लीन्हें सरसिज[7] पान ।
प्यारे को आवत निरषि सूही अति हहरान ।।१४६।।

यथा

सकल सहेलिनि में सुंदर नबेली नारि अति अलबेली षेल षेलै केलि धाम मैं।
कमल वरन तन कमलाषी कमलमुषी कोमल करन कंज लीन्हैं वाम काम मैं ।

---

१. करि ख २. ·····ता ख ३. अनंग ख में अनुपलब्ध ४. स ख ५. चाहै नारी है ख में अनुपलब्ध ६. मनिहारी ख ७. ज ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जूही सी सुवास भरी[१] सूही सी लसत प्यारी सूही तन सारी सौहैं छवि अभिराम मैं।
रंगलाल प्यारे को विलोकत ही वाल वह विकल विहाल भई फंसी मानो दाम मैं ।।१४७।।

अथ मालकौस बधू सूहो लक्षन

दोहा

सुंदर जोवन मद गरव निरषत तिरछै नैन।
पिय सों कछु सतरात है सूहो कहत न बैन[२] ।।१४८।।

यथा

चंचल नैन चमचमात चंचला सी वाल चंद्र की कला[३] सी कटि छीन छमकति है।
हेम को हमायल औ पायल नीके पायन[४] मैं पैन्है[५] चित चायन चकी सी चमकति है।
उसके उरोज उर विकसे कपोल पुनि विहसे विलोक दुति देह दमकति है।
सूही सिर उढनी औ सूहो सी सयान लियै[६] रंगलाल प्यारे सो तिरीछे तमकति है।।
।।१४९।।

अथ अजैपालबधू भठियाल लक्षन

दोहा

सलज[७] सहेली ओट ह्वै निरषत पिय को रूप।
चंदमुषी भठियाल[८] को वरनत यहै सरूप ।।१५०।।

यथा

दीप की सिषा सी देह दीपति दीपति जाकी दूनी दुति दामिनी तें काम की कला सी है।
बोलति सुधा से बैन मैन के से मंत्र[९] मानौ नैन अति पैने सरमार के विलासी है।
उर उर जात जलजात से उठत जात[१०] तातै[११] जानी जात रस बेली सफला सी है।
प्यारे रंगलाल को विलोकै आली ओट ह्वै कै सोहै भठियाल[१२] कैधों बाल[१३]
नवला सी है ।।१५१।।

---

१. भीरी ख २. वेनैन ख ३. ककला ख ४. न ख ५. पैन ख ६. लियै ख में अनुपलब्ध ७. सलल ख ८. भटिव्याल ख ९. कै संमंत्र ख १०. जात ख में अनुपलब्ध ११. नातै क १२. सटिव्याल ख १३. चाल ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ कन्हरनटबधू अष्टी लक्षन[१]

दोहा

सजि सिंगार सब सषिन मिलि पहुचाई[२] रति-धाम ।
नाहि करै नीवी पकर वरनत अष्टी वाम ॥१५२॥

यथा

नष सिष साजिकै सिगार तन आलीगन ल्याई केलिमंदिर में इंदिरासी वाल है ।
विमल विछौना पै बैठाई गौनाइत सी नैन मृग छौना तै सरस रसाल[३] है ।
ऐसे में अचानक ही आय गयो प्यारो तव सषियां सरकि गई सुंदर विहाल है ।
कर गहि नीवी ईबी सीबी करै अष्टी सम अंक भरि लैके रंगलाल भे निहाल है ॥१५३॥

इति भैरव पुत्रवधू ॥

भैरव सषा रिषभ लक्षन

दोहा

कुसुम छरी लै कर-कमल फुलवारी सुषधाम ।
फिरत कहा वन को कहत रिषभ राग अभिराम ॥१५४॥

यथा

सब गुन आगर गंभीरता को सागर[४] नागर सरूप सुभ वेष सुषदाई है ।
लीन्हे हाथ फूलछरी आछी अति रस[५] भरी बोल बोल सहचरी[६] चंद छवि छाई है ।
कहै कविदास रंगलाल के विलासकाज परम हुलास ही सों कीन्ही फुलवाई है ।
रिषभ सषा है राग भैरव को भाव भरो भूषन वषन तन जोति छविताई[७] है॥१५५॥

अथ भैरव सषी[८] सोहनी लक्षन

दोहा

नील जलद सम[९] स्याम तन[१०] अति सुंदर[११] सुकुमारु ।
कर लै बीन वजावहीं नाम सोहनी चारु ॥१५६॥

---

१. अटीष्टी ख लक्षन क में अनुपलब्ध २. सहु ख ३. रिसाल ख ४. सब······को सागर ख में अनुपलब्ध ५. र भरी ख ६. सहवर ख ७. छई ख, ८. सषर ख ९. तन ख १०. नन ख ११. सूंद ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

इंदीवर नैंन सोहै इंदिरा[1] सी इंदुमुखी ऊषापति मंदिर में आसन अमल है।
रतन जटित मनिभूषननि भूपित है दूषन न एको देह अति[2] ही विमल है।
स्यामा सुकुमार सुभ[3] वीन लै वजावत[4] है कहि कविदास कर कोमल कमल है।
मोहै रंगलाल मनमोहिनी यौ सोहनी लौ फैल्यौ आस पास जास अंग परिमल है।।१५७।।

इति भैरवस्य सपरिवार भेद संपूर्ण ।।

—०—

१ वासा ख २. अतही ख ३. क्यामा सुकमार सुरा ख ४. वीन लै बजावत ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ मेघमल्हार द्वितीय राग सपरिवार भेद उदाहरन

दोहा

सो[ह]त स्याम सरीर घन वसन सुदामिनि जोति ।
कुंडल सोहत कान में कहि मलार इमि होति ।।१५८।।

यथा

स्याम घन अंग रंग दामिनी दमक पट जरतार[१] चीरा[२] सरपेंच[३] मनि गन[४] को ।
कुंडल श्रवन मुकुताफल चमक चारु इंद्रधनु भौंह छवि पिंगल नयन को ।
आसन विचित्र पाक सो सोभावंत रंगलाल प्यारो पति रसिक जनन को ।
पावस में राग रस वरसा में वार वार देषीरी[५] मल्हार सो उदार तन मन को ।।१५९।।

अथ मेघ[६] मल्हारस्य षट् रागन्यः तत्र प्रथम

कान्हरा रागिनी लक्षन

दोहा

तरु असोक तर अति दुषित प्रीतम विरह विहाल ।
वदन मलिन दुति कान्हरा रसिकन कही रसाल ।।१६०।।

यथा

पति अनुराग भरी बैठी है निकुञ्जधाम प्रीतम के सोक सों असोक तरु के तलै ।
व्याकुल विरह वस वदन मलीन अति प्रेमरसलीन षीन मन पीर दहलै ।
बेनीकृत जटाजूट गोरी बैस थोरी[७] तातै भोरी मति रति काम चिंता चित में रलै ।
प्यारे रंगलाल सों लुभानी[८] कान्हरा सरूप धरि मन ध्यान ग्यान मानो
कान्हही[९] छलै ।।१६१।।

---

१. जए ख २. वीरा ख ३. पेव ख ४. मनिन ख ५. देषि क ६. मेघ क प्रति में अनुपलब्ध । ७. षोरी ख ८. भानी ख ९. काहूहै ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ द्वितीय रागिनी[1] किदारा लक्षन

दोहा

चौकी पर वैठी तिया सीतल जलनि अन्हात[2] ।
मांगत वसन[3]सषीन सों केसपास चुचुआत ।।१६२।।

यथा

सुंदर सुगंध तन लाय[4] लाय चित चाय करि प्यारे रंगलाल प्रेम पगी गज गामिनी ।
मंजन करति मनिकंचन खचित चौकी बैठि के सघन[5]वारि धारा वर कामिनी ।
सषीजन चारु चीर चुनि कै लए हैं कर तिहि ओर[6] देषै देह दुति जैसे दामिनी ।
मुकुता समान बुंद केसतें गिरत जात लसत किदारा सम केलि भूमि भामिनी ।।१६३।।

अथ तृतीय[7] पूरबी रागनी लक्षन

दोहा

भूषन वसन सिंगार सजि उर कुच कुंकुम लाय ।
निरषत वाट सहेट में पुरवी कर चित लाय ।।१६४।।

यथा

विधु सी वदन काँति दात्यो सी दसन पांति मुरि मुसिक्याति ओठ[8] लाल अवरेपिये ।
भूषन वसन चारु चंदन कलित कुच कुंकुम सहित उर कंचुकी सी लेपिये ।
सारी जरतार की झलकदार घेरदार[9] लहंगा कीमषाव[10] को विमल विसेपिये ।
पूरवी सी प्यारी[11]वाम वैठी है सहेट धाम प्यारे रंगलाल पगु धारत ही देषिये ।।१६५।।

अर्थ [चतुर्थ] बिलावली रागनी[12]लक्षन

दोहा

कुंज भवन पिय वाट लषि अति अकुलानी वाम ।
भोर भये आई सदन कही विलावली छाम ।।१६६।।

---

१. 'द्वितीय रागनी' क में अनुपलब्ध २. त ख प्रति ३. व·······ख प्रति ४. 'लाय' ख में अनुपलब्ध ५. सघ ख ६. वोर ख ७. तृतीय क में अनुपलब्ध ८. वोठ ख ९. घेरवार ख १०. कीमपाप क ११. 'प्यारी' ख में अप्राप्य १२. 'रागनी' ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

सघन निकुंज जहां गुंजत मधुप पुंज मंजु मंजु[१] कोकिल करत गान तान है।
आंषिन[२] में अंजन कै मंजन कै देह दुति पिय मनरंजन को बैठी सुषदान है।
बीती निस चारो जाम प्यारो नाहि आयो धाम सरस सकाम भई विकल विहान है।
रंगलाल देषे विनु वाल तौ विलावली सी वावरी सी बोलतिन प्रेमरस पान है।।१६७।।

अथ पंचमी[३] मधुमाधवी[४] लक्षन

दोहा

काम वान सो विवस ह्वै पिय पै चली अकेली।
गरजत घन अंधियार मधु-माधवि[५] करन सुकेली।।१६८।।

यथा

काम मदमाती[६] वाम स्याम पै निकुंज धाम साजि[७] अभिराम तनु भूषन सुमन को।
कारी अंधियारी राति चपला[८] चमकि जात देषि कविदास त्रास[९] होत नाहिं मन को[१०]।
चंचल नयन तौ चकित चहुधा चितै तिल तिल[११] रुद्राछ गरै हार मनिगन को।
प्यारे रंगलाल जूपै चली मधु-माधवी सी वेली सी लहलहात संभारै न तन को।।१६९।।

अथ छवी रागनी[१२] कोडा लक्षन

दोहा

अति ही मदिरामत्त ह्वै भुज भरि प्रीतम लेती।
प्रौढ सकल रस केलि मैं कोडा कही सुचेति।।१७०।।

यथा

रंभा के समान रूप तिय को न तुलै आन नाग नर किन्नर के भौन मैं न देषिये।
सोरह सिंगार तन चित्रित वसन सव पहिरे अनंग की तरंगनी सी लेषिये।

---

१. मंजुर क २. आपन क ३. 'पंचमी' क में अनुपलब्ध ४ मालवी ख
५. माधकि क ६. मदती ख ७. सजि ख ८. चपल क ९. भासर ख
१०. न ख प्रति ११. चितौत लालत ख १२. 'छवी रागनी' क में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कंचनकलित मनिजटित पलंग पर कीन्हें मधुपान मत्त लोचन विसेषिये ।
प्यारे रंगलाल जू सो अंक में भरत बाल पेन्हे उर माल वह कोडा सम पेषिये ।।१७१।।

इति मेघमलारस्य षट्[१] रागिन्यः ।।

अथ [षट् पुत्राः] तत्रादौ[२] छायानाटलक्षन

दोहा

वांधि शस्त्र कटि तुरग चढि ह्वै मृगया रसलीन ।
मृग मारत वन मैं फिरत छायानाट प्रबीन ।।१७२।।

यथा

अति उरगारि बेग तुरग सवारि कटि वांधे तरवारि तीर पूरित निषंग है ।
लै कर कमान वान तान कै सुकानन[३] लौं कानन चरत मृग मारत उमंग है ।
कहि कविदास रूप जोवन प्रकास जाको सरस विराजमान जैसे ही अनंग है ।
छायानाट[४] राग कैधौ रंगलाल प्यारो वन षेलत[५] सिकार तन वास रंग रंग है ।।१७३।।

अथ सुद्धनाट द्वितीय पुत्र लक्षन

दोहा

रति मंदिर मे बैठि कै गावत नीकी तान ।
निज प्यारी सों सुनत पुनि सुद्धनाट तिहि जान[६] ।।१७४।।

यथा

केलि के सदन बैठि मदन समान रूप राजत रदन रुचि दारिम रसाल है ।
चीरा सरपेंच चारु हीरा को लसत तैसो जामा जरतार को झलक उरमाल है ।
लै कर तंबूरा तान गावत गवावत[७] औ प्यारी सों सुनत होत हरषि निहाल है ।
लोचन विसाल मुष पान सो अधर लाल सुद्धनाट राग लौ प्यारो रंगलाल है ।।१७५।।

---

१. पुत्राः ख में अधिक २. तत्रादौ क में अनुपलब्ध ३. सुकानन ख ४. सम ख
५. पेल ख ६. सुवनानी की तान ख ७. मवावत ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ त्रितीय पुत्र गौड लक्षन

सघन घटा वरषन लगी निज प्यारी लै कुंज ।
विहरत गौड विचछनहि निरषि हसै अलि पुंज ॥१७६॥

यथा

सुघर सघन पुंज मंजुल लतानि तरु देषत[१] विहारी प्यारी संग सहचरी है ।
उमडि घुमडि घन उनयें अचानक ही चपला चमक तौ चितवत हहरी है ।
लपटि झपटि प्यारी प्यारो के कपोल चूमि ठाढो[२] है कदंवतर भूमि जहां हरी है ।
अंगुरी[३] अधर दावि सषिया[४] हसन लागी गौड की सी रीति रंगलाल तहां करी है ॥१७७॥

अथ चतुर्थपुत्र हमीरनाट लक्षन

दोहा

दंपति आसन येक हीं करिकै बिबिधि वनाव ।
मद पीवत येक साथ हीं हमीरनाट तिहि गाव ॥१७८॥

यथा

कामरूप अंगवास सोहत अधर रंग कामिनी सुघर संग बैठी मसनंद है ।
कानन विराजै गजमोती उर हार चारु करन अंगूठी आछी भुजबंद है ।
मदिरा मंगाय चितचाय सरसाय अति ढारि कै चषक चारु आनंद के कंद है ।
तिय ही पिआवै आप पीवत हमीरनाट ऐसो रंगलाल मुसिक्यात मंद मंद[५] है ॥१७९॥

अथ पंचम पुत्र सावंत लक्षन

दोहा

तिय आसन बैठाय कै आलापत[६] मृदु तान ।
पुनि नाचत[७] गतिभेद सौं यों सावंत वषान ॥१८०॥

---

१. देष ख २. बाठै ख ३. अंगूरी क ४. सषियों क ५. मंद ख ६. आपजेत क एवं ख ७. नावति ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

सुंदर सुजान सव गुन को निधान रति केलि के भवन आनि प्यारी सुषदान[1] को ।
सुर अरु तान को प्रमान सव जानि जानि गान[2] के विधान ही सों लेत हरिमान को ।
प्यारो रसषान रस रंग सरसाय स्यान[3] लेत गत आन आन नाच की कलान को ।
सावंत समान प्यारो रंगलाल रुपवान मुर[4] मुसकान देषि रोषै कुल कान को ।।१८१।।

अथ षष्ठ पुत्र अडाना लक्षन

दोहा

सुंदर मंदिर बैठि कै देषत तियहि अनूप ।
सुमन वास चहुओर अति कह्यो अडाना रूप ।।१८२।।

यथा

धाम अभिराम[5] तहां आसन विमल वाम सुंदर सरोज स्याम छवि अवरेषिये ।
लोचन विसाल मदपान तैं अधिक लाल रूप है रसाल गलमाल पुनि पेषिये ।
कहै कविदास आसपास में सुवास सव हास मुष मंद मंद तिय तन देषिये ।
चंदन सरस चीर पेन्हे मुष चन्द्रमा सो रंगलाल प्यारे[6] को अडाना ते विसेषिये ।।१८३।।

इति मेघमलारस्य[7] पुत्राः ।।

---

१. सुदान ख २. मान क ३. धान ख ४. सुर ख ५. अतिराभ ख
६. प्यासरे ख ७. मलास्य क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ मेघमलारस्य पुत्रबधू तत्र छायानाटबधू

जैतश्री लक्षन

दोहा

सुंदर सकल सिंगार सजि पियमिलाप के हेत ।
सगुन विचारत सषिन सों जैतसिरी चित चेत ।।१८४।।

यथा

कनक वरन तन भूषन कनक ही को नगन जटित अंग अंग वास धारे है ।
सरस सुगंध जीववन्धु सो अधर लाल कज्जल कलित लोल लोचन निहारे है ।
कहि कविदास सेज साजत सषी समाज आप गृहकाज तजि सगुन सभारे है ।
प्यारे रंगलाल जू की वाट वाल देषत है जैतसिरी रागनी यों प्रेम उर धारे है ।।१८५।।

अथ सुद्धनाटबधू जोगिया लक्षन

दोहा

पिय विरहाकुल वाल ह्वै छाडै भूषन वास ।
तन विभूति जपमाल कर नाम जोगिया तास[१] ।।१८६।।

यथा

प्यारो परवास रंगलाल कहि कविदास रहत उदास यातैं वास छाडै रंग के ।
निकसि[२] अकेली वन[३] छाडिकै सहेली सव पैन्ह उरसेली वह उरज उतंग के ।
राषै मृगछाल मुष लायकै विभूति वाला लीन्हे कर माला मंत्र जपत अनंग के ।
जोग सी करत जग जोगिया असावरी लौ सावरी वनाव तजि प्रति अंग अंग के ।।१८७।।

---

१. तासु क २. नकस ख ३. वहन ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ गौडबधू पुरिया लक्षन

दोहा

प्रेम विवस ह्वै आप पिय पगधारे तिय धाम ।
छिरकत षरी गुलाव लै विहसि पूरिया वाम ।।१८८।।

यथा

आये मनभावन सुहावन पिया के गेह नेह सरसावन विहावन[1] सकल राति ।
प्यारी उत[2] आय मुसक्याय लीन्हों आगे ह्वै विमलविछौना पै विठायो रूप रति काति ।
अमल अतरदान पन्नन[3] के पानदान और गुलदान भरे फूलन विविधि भाँति ।
लै कर गुलाव प्यारी पूरिया लौ प्रेमपगी प्यारे रंगलाल जू पै छिरकत कहत वाति ।।१८९।।

अथ हमीरनाटबधू इमन लक्षन

दोहा

रूपमंजरी सील सै कीन्हे सकल सिंगारु ।
लोचनि कोरनि सो लषै पियहि इमन यह चारु ।।१९०।।

यथा

दमकतदेह दुति दामिनी सी कामिनी की अंग अंग आभरन जटित नगन है ।
रंगलाल प्यारे को विलोकत विलोचनके कोरन सों मोर मुष आनंद मगन[4] है ।
करि परिहास बोल बोलत विलास ही के सषिन हुलास भरे हेरत दृगन है ।
झलकदार सारी जरतार की पहिरि प्यारी यह[5] वरनारि किधौं रागनी इमन है ।।१९१।।

अथ सावंतबधू देसी लक्षन

दोहा

कामातुर ह्वै रति सदन पिय चाहत लपटान ।
पाय[6] परत हा हा करत तिय देसी रसषान ।।१९२।।

---

१. विहाधन ख २. उटि ख ३. पन्नकन ख ४. ममन ख ५. 'यह' ख में अनुपलब्ध ६. पाज ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

बैठी रतिमंदिर में इंदिरा सी इंदुमुषी सुंदर सुघर नारि जोवन गहेली है ।
गोरे गात नीलपट सोहै इहि भांति पुनि जैसे घनस्याम दुरै दामिनी सुहेली है ।
पति अलसात लषि छल सो जगावत है गावत है गीत औ बुझावत पहेली है ।
सव अंग चातुर मनोज रस आतुर ह्वै मेरे रंगलाल जू के देसी लौ अकेली है ॥१९३॥

अथ अडानाबधू राजबिजै लक्षन

दोहा

षेलत ही निज सषिन संग पिय आवत लषि वाल ।
उचकि अचानक थकित ह्वै राजविजै तजि ष्याल ॥१९४॥

यथा

षेलत ही प्यारी चित्रसारी में सषिन साथ चौसर विहारी उत आये तिहि छन है ।
देषि मनभावन अचानक उचकि उठी मुष पियरानो थहरानो सव तन है ।
कहि कविदास सषि ग्रांचर को ओट करि ठाढी आस पास तन[१] सुवरन बरन है ।
हा हा कर प्यारे रंगलाल जू हंसत ठाढे राजै राजविजै ऐसी लीन्हे वालपन है ॥१९५॥

इति मेघमलारस्य षट्[२] पुत्रवधू: ।

अथ मेघमलारस्य सषा गौरा लक्षन

दोहा

केलि सदन निज मित्र संग बैठी परम उदार ।
राग ताल अरु तान को गौरा भेद उचार[३] ॥१९६॥

यथा

नाचत नबेली अलबेली केलि मंदिर में सुंदर सुघर तान गावत रसाल है ।
आछे चितचाव सों वताबै भाव भूरि हाव करिकै रिझावै पुनि रीझ जात लाल है ।
बैठो कविदास पास प्यारे रंगलाल जू के अंग अंग भू[ष]न विराजै उर माल है ।
मेघ को सषा है[४] कैधौं गौरा सम गौर वर्ण[५] भेद सो बुझावै सुरतान मान ताल है॥१९७॥

---

१. तिय क २. 'षट्' ख में अनुपलब्ध ३. उवार ख ४ 'है' ख में अनुपलब्ध
५. वर्न क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ मेघमल्हारस्य सषी नटमल्हारी लक्षन

दोहा

उनयो वादर देषि नभ हरषित ह्वै पिय पास ।
गावत कर गहि वीन तिय नट-मल्हारि सुषरास ।।१९८।।

यथा

नील जलजात सम गातदुति भांति भांति चूनरी पहिरि अंग भूषन सोहावने ।
बैठि कविदास पिय पास नभ ताहि समै वादर उमगि लागे नीर वरसावने ।
जानिकै मनोरथ पियारे रंगलाल जू को बीन परबीन गहि लागी है वजावने ।
सोर सुनि मोरनको सषी नटमल्हारी लौं प्यारी पुनि लागी यौं मधुरतानगावने।।१९९।।

इति मेघमल्हारस्य सपरिवाराः संपूरनम्

—०—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ तृतीय राग[१] श्रीराग सपरिवार भेद[२] उदाहरन

दोहा

कर सरोज फेरत फिरत कुंज कुंज अनुराग ।
कुसुम हार पहिरें गरे अति सुंदर श्रीराग ॥२००॥

यथा

सुंदर सुघर चारु भूषन वसन धरै उज्जल वरन तन अति सुकुमार है ।
कर लै कमलफूल फेरत फिरत मंजु वंजुल निकुंजवन करत विहार है ।
चुनि चुनि ल्यावै सहचरी[३] गुन गान करि विविधि प्रसून को रचित उर हार है ।
सांझ समै आली आज प्यारे रंगलाल जू को निरष्यो श्रीराग हू तै परम उदार है॥२०१॥

अथ श्रीरागस्य षट रागिन्यः

तत्रादौ सुभगा[४] लक्षन

दोहा

गेह सरोवर के निकट मनिन रचित अभिराम ।
पुस्तक मोती माल कर बैठी सुभगा वाम ॥२०२॥

यथा

सुंदर सरोवर सरोज राजहंस जुत सेनी सुषदेनी राषी मनिन वनाय कै ।
मंदिर विचित्र सव चित्रनि सो चित्रित है चित्रिनी लौं बैठी[५] तहां सोभा सरसाय कै ।
ऐसे रतिकाज सव साजि के सिंगार चारु भूषन वसन औ सुगंध तन लाय कै ।
वाम कर कामतंत्र दाहिने मुकुतमाल प्यारे रंगलाल जू को रही[६] मन ध्याय कै[७]॥२०३॥

---

१. 'राग' क में अनुपलब्ध २. 'भेद' क में अनुपलब्ध ३. सहवरी ख
४. शुभ्यगा ख ५. बैवि ख ६. रहो क ७. 'कै' क में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ द्वितीय गंधारी लक्षन

दोहा

मधुमाती[१] आलस[२] भरी निस जागी चहु जाम ।
बीन वजावै लीन रस भोर गंधारी वाम ॥२०४॥

यथा

परम प्रबीन पुनि राग रंग रसलीन जोवन नवीन[३] निस जागी चारो जाम है ।
प्रेम[४] मदमाती अलसाती औ जंभाती उठि[५] चंद अवदात मुष सोभा अभिराम है ।
बैठी तिय पास कविदास रंगलाल जू के परम हुलास[६] सविलास कटि छाम है ।
रागनी गंधारी[७] कालौं गावै अनुराग ही सों बीन[८] लै वजावै परबीन रति धाम है ॥२०५॥

अथ तृतीय गौरी लक्षन

दोहा

स्याम गात सुभ बेष धरि सकल गुननि की षान ।
बीन वजावै हाथ लै गौरी परम सुजान ॥२०६॥

यथा

नीलमनि ऐसो जाको सांवरो सलोनो गात सोहत तिलोतमा लौ रूप सो उजागरी ।
मंद मुसक्याति मुष-दाल्यो[९] सी दसन पांति सुंदर सुजात[१०] प्यारी सब गुन आगरी ।
आलीगन मध्य में बिराजै तिय देवता सी काम की कलासी नवलासी नव नागरी ।
गौरी सी वजावत है बीन परबीन तिय रंगलाल प्यारे जू के प्रेम अनुराग री ॥२०७॥

अथ चतुर्थ[११] कुमारी लक्षन

दोहा

बिबिधि कुसुम लै संकरहि पूजि षरी करजोर ।
मांगति है अभिलाष निज सुकुमारी तिहि ठौर ॥२०८॥

---

१. मकमाती ख २. आरस क ३. मबीन ख ४. पेम क ५. उबि ख ६. हुसास ख ७. गवांरी ख ८. वन ख ९. सुषदास्यो ख १०. जाति ख ११. चतर्थ ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

सुंदर सुघर सुकुमार हिय सोहै हार चंद्रिका वरन मुष चन्द्र सम लेषिये ।
षंजन सो नैन जुग अंजन[१] की लीक सोहै पिय मनरंजन[२] की बिधि अवरेषिये ।
दिनन की थोरी[३] गोरी गौरी संकरहि पूजि विनती करत नेक कृपा दृग देषिये ।
प्यारो रंगलाल वरहेत[४] वर मागत यौं कन्यका कुमारी रागनी सी आज देषिये ।।२०९।।

अथ पंचमी बिलावली लक्षन[५]

दोहा

मेचक तन में पीत पट पहिरें अति सुकुमारी ।
गान करैं पिय निकट तिहि कहि विलावली[६] नारि ।।२१०।।

यथा

अभिनव जलद काँति दात्यो[७] सी दसन पांति चौगुनी[८] चटक चारु की चमक तें ।
पेन्हे तन पीत पट हाटक घटित वर भूषन की दुति दूनी दामिनी दमक तें ।
प्यारे रंगलाल ढिग बैठी वालष्याल ही सों उठै[९] धुनि घेरदार[१०] लंहगा धंमक तें ।
कर गहि बीन परबीन यौं विलावली सी सुघर करत गान तान की[११] तमक तें ।।२११।।

अथ षष्ट बिरागी लक्षन

दोहा

बैठि वघंवर पै सरस रटै सदा पिय नाम ।
कर जोरी लै ताल की कही विरागी वाम ।।२१२।।

यथा

इंदु सो वदन अरविंद सो नयन जुग इंदिरा तें सरस दुति[१२] सुषद सोहावनी ।
आठौ जाम काम वस वाम पिय नाम रटि करै अभिलाष लाष भांति मन भावनी ।
चहुंधा चतुर नर निरषै तीरीछे नैन कोरनिसों मोरमुष रस उपजावनी ।
बैठि के वघंवर पै अंवर विचित्र करताल लै वजावै रंगलाल गुनगावनी ।।२१३।।

इति श्रीरागस्य षट रागिन्यः ।।

---

१. अंजग ख २. रंजत ख ३. पोरी ख ४. हेवरत ख ५. लछ ख ६. विलावाल ख ७. दास्यो ख ८. चाँगुनी क ९. उवै ख १०. घेरवार ख ११. के क प्रति १२. आछी क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्रीरागस्य[1] षटपुत्राः तत्रादौ जैतकल्यान लक्षन

दोहा

सुंदर तिय देषी कहूं तासु विरह[2] अकुलान[3] ।
सषी डुलावै बीजनो कह्यो जयतकल्यान ॥११४॥

यथा

देषी कहूँ वालमुष चंद ते रसाल जाको लोचन विसाल लषि साल मानो दै गई ।
आय कै येकंत रति-कंत सर पीडित ह्वै कहत वचन चित चेटक सो कै गई ।
आली कर [4]विजन विजन डुलावत हीं व्याकुल विहाल वाल ग्रीवा तव नै गई ।
लेत है उसास कविदास रंगलाल जू की जयतकल्यान राग कैसी गत ह्वै गई ॥११५॥

अथ द्वितीय पुत्र[5] षटराग लक्षन

दोहा

प्यारी को निज निकट ही इक आसन बैठार ।
निरषि नाच सव भेद कही यौ षटराग उदार[6] ॥११६॥

यथा

फूली फुलवारी[7] बीच बैठे येक आसन पै दंपति निरषि नाच[8] आनंद लहत है ।
ताल अरु तान को प्रमान मन जान-जान हाव भाव बूझि रीझ प्यारी सो कहत है ।
कहि कविदास[9] रूपरासि सविलास चित परम हुलास मन दोऊ उमहत[10] है ।
राजै षटराग लौ पियारो रंगलाल आली लीन्हें अंकमाल अंकमालिका[11] चहत है ॥२१७॥

अथ तृतीय पुत्र[12] स्यामराम लक्षन

दोहा

गावत सुंदर तिय सुघर कामकेलि के धाम ।
सुनत सुषद अति प्रेम सों स्याम राम तिहि नाम ॥२१८॥

---

१. श्रीरागस्य क में अनुपलब्ध २. विहरत क ३. कलान क ४. वर क ५. 'पुत्र' क में अनुपलब्ध ६. 'ग उदार' ख में अनुपलब्ध ७. 'फली फुलवारी' ख में अनुपलब्ध ८. नरचि ख ९. कबि ख १०. नमहत ख ११. अंकमालहू ख १२. 'पुत्र' क में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

अलिक[१] तिलक चारु केसर को सुकुमार चीरा की झलक भाल सौहै लाल लाल जू ।
जलज विराजै विंब श्रवन जलज सम राजै मुष मंजु पुनि मैन महिपाल जू ।
कहि कविदास बैठी मंदिर विलास ही के सोहै तिय आसपास दामिनी को जाल जू ।
स्यामल सरीर सुभ स्यामराम सामराग सुनत सुषद तान प्यारो रंगलाल जू ॥२१९॥

अथ चतुर्थ पुत्र बागेस्वर लक्षन

दोहा

बैठि सुषद सीसामहल निज प्यारी[२] लै पास ।
पढ़ि कवित्त पुनि अर्थ कहि वागेस्वर[३] सुषरास ॥२२०॥

यथा

सारस वदन बैठि सीसा के सदन मंजु मुरति मदन[४] हू ते सरस रसाल है ।
आछे ओठ[५] लाल सीस लालही को सरपेंच पेन्हे उरमाल तौ प्रवाल की विसाल है ।
पढ़त कवित्त कुच वर्णन को कविदास करि परिहास सविलास बैठि बाल है ।
अरथ[६] बुझाय कै रिझाय आप रीझत है वागेस्वर राग कै पियारो रंगलाल है ॥२२१॥

अथ पंचम पुत्र हेमकल्यान लक्षन

दोहा

वर आसन बैठाय कै झवा करत पिय पाय ।
कह्यो हेमकल्यान यौ सव भूषन[७] पहिराय ॥२२२॥

यथा

रूप रतिराज कैसो भूषन सकल साजि पेन्हे रतिकाज कामकेलि के भवन है ।
प्यारी को बिठाय वर आसन सहास पाय नीकै कै झवाय करै बीजन पवन है ।
कहै कविदास सव अंगनि[८] सुवास[९] लाय[१०] माल पहिराय कर्णफूल हू श्रवन है ।
हेम रंग अंग हेम[११] कल्यान लौ अधीन ह्वै तियके प्रबीन रंगलाल जू रवन है ॥२२३॥

---

१. अतिक ख २. प्यार ख ३. बागस्वर ख ४. बदन क ५. औव क ६. अरघुझ ख ७. भूषत ख ८. कहै···अंगनि ख में अनुपलब्ध ९. सुबा ख १०. लाप ख ११. हैंम क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ षष्ट[1] पुत्त षेमकल्यान लक्षन

दोहा

प्यारी को अंकम [में] भरत लष्यो अन्य तिय ओर[2] ।
मान जान कछु ष्याल सो षेमकल्यानहु छोर ॥२२४॥

यथा

अवला अनेक आस पास तामैं[3] लीन्हें उर लाय मन भावती जो वाल है ।
पीवत अधर रस वस ह्वै अनंग ही के चूमत[4] कपोल लोल लोचन विसाल है ।
देषत ही देष[5] दृग कोरन सों और[6] ओर प्यारी मुष मोरि बैठि ऐंठी तिहि काल है ।
ष्याल सों छुटायो षेमकल्यान ऐसो मान वांको [7]परम सुजान सुषदान[8] रंगलाल ।
है ॥२२५॥

इति श्रीरागस्य षट्[9] रागन्यः

अथ श्रीरागस्य पुत्रबध्वः तत्रादौ देवकली लक्षन

दोहा

रंगभवन में बैठि कै मद लैकर परबीन ।
देषत पिय की ओर हंसि देवकली कटि छीन ॥२२६॥

यथा

चूनरी[10] चटकदार पैन्हें सुकुमार चारु सोहै उर हार गजमोतिन रचित्र है ।
भूषन अनेक भांति भांति[11] के लसत गात उर उरजात अति पीन चल चित्त है ।
जलद बरन तन जलजा समान रूप बैठि रंग भौन ज्यों मनिन खचित है ।
चंचल चषन चितवत रंगलाल जू को लैकर चषक देवकली सी सुचित है ॥२२७॥

अथ षट्रागस्य बधू मांझ लक्षन

दोहा

केलि भवन पिय सों करै रतिहि रसीली नारि ।
मद छाकी अति प्रौढ तिय माझ कही सुकुमारि[12] ॥२२८॥

---

१. षट् ख २. और क ३. कबिदास क नामै ख ४. चूवत ख ५. देषि देषि ख ६. ओर क ७. वा ख प्रति ८. सुदान क ९. 'षट्' क में अनुपलब्ध १०. चूरीनरी ख ११. 'भांति' ख में अनुपलब्ध १२. झुकुमार ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

तिय अति चातुर मनोज रस आतुर ह्वै अंग अंग आभरन वसन सुधारे है ।
कनक लता सी लपटानी रंगलाल जू सो ललित कपोल चूम कुच पट टारे है ।
विथुरी अलक औ चिलक चारु चौर ऐसी लोचन रसीले मदपान कर प्यारे है ।
रूप है रसाल पैन्हे उर मोती माल माझ ऐसी वाल रति करति निहारे है ॥२२९॥

अथ स्याम राम बधू गौडसारंग[1] लक्षन

दोहा

वाग विलोकत ही षरी वकुल वृक्ष तर नारि ।
गावति[2] है अनुराग सो गौरा सारंग चारि[3] ॥२३०॥

यथा

चतुर सहेली संग लीन्हें अलबेली आप बेली सी नबेली नव जोवन लहलही ।
प्यारी परवीन कर[4] वीन लै वजावत है लंक अरु[5] छीन तरु डारन गहगही ।
देषी हम आज रंगलाल पिय वाल जाकी सरस सुगंध सव अंगनि महमही ।
गावत सुघर गौर सारंग लौं सारंग ही सारंग वदन कुच नारंग उरहि[6] रही ॥२३१॥

अथ बागेस्वर बधू सरस्वती लक्षन

दोहा

कंत वाट निरषै वधू कर लै वीन इकंत ।
गुन गावै मनभावती कहै सरस्वती संत ॥२३२॥

यथा

इंदु सो वदन स्वेत चंदन[7] को विंदु स्वेत स्वेत अरविंद[8] ही को आसन लसत है ।
हीरा सो जटित अंग भूषन सकल स्वेत स्वेत ही वसन तन जोति सरसत है ।

---

१. मारंग ख २. गालेति ख ३. वारु ख ४. 'प्यारी परवीन कर' ख में अनुपलब्ध
५. अति ख ६. उर हक्री ख ७. वंदन ख ८. अरिविंद ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहि कविदास कुंद कलिका[1] की समान दंत बैठि कै इकंत पिय वाट दरसत है ।
वाल रंगलाल जू की बीन लै वजावति है गावति सरस्वती ज्यौं सुधा वरसत है ॥२३३॥

अथ हेमकल्यानबधू परज लक्षन

दोहा

पिय सुवाय[2] पायत वयठि पाय पै लोटति नारि ।
वरजत पिय बोलत मधुर उत्तम परज विचारि ॥२३४॥

यथा

सुंदर सुधारि सेज पाव[3] रंगा मेज जाको सषिन सदन भेज रंग के महल है ।
सकल सुगंध[4] कविदास आसपास धरि और मुषवास नवजोवन लहल है ।
प्रीत कर प्यारे को सुवाय कै पलंग पर पायन पे लोटत यौ लावत टहल है ।
वरज वरज रहै प्यारे रंगलाल तव परज लौ अरज कीन्ही हमको सहल है ॥२३५॥

अथ षेमकल्यान बधू जाजवंती लक्षन

दोहा

बैठि सेज[5] पिय तियहि लै अंक म [में] भर सुषदान ।
टुट्यो हार हिय देषि कै जाजवंति तिय[6] जान ॥२३६॥

यथा

कोमल कमल कर सरस चरन चारु चिकुर चमर सम[7] चीकने विसाल है ।
भूषन विविधि भांति राजत रदन पांति विधु सरमात लषि जाको रूपजाल है ।
बैठि परजंक पिय अंक में भरन[8] लाग्यौ लंक लचि गई और टूटी उरमाल है ।
तीरछी विलोचन[9] विलोकै रंगलाल जू को वाल[10] जाजवंती लौ परम रिसाल है ॥२३७॥

इति मेघमलारास्य षट् पुत्रवधू:[11]

---

१. कलिक क २. सुवास ख ३. पावा क ४. सुध ख ५. सज ख ६. जिय ख ७. म ख प्रति ८. भरनगा ख ९. विलोकन क विलेकनि ख १०. वोल क ११. 'इति श्रीरागस्य षट् पुत्रबध्व:' क में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्रीरागस्य[1] पंचम नाम सषा लक्षन

दोहा

फुलवारी में फूल चुनि ल्यावति रचिति [भरति] चंगेर ।
धरति जात पंचम तहां नवला नचत घनेर ।।२३८।।

यथा

सरस सुधारी काम केलि ही को फुलवारी जामें सुभ सौरभ[2] है सुमन लतान की ।
बैठी जहां जाय रंगलाल सुषदाय अति उर में उछाह छाह विविधि बितान की ।
ताही समै कविदास पंचम सषा सो पास वंदन सहास दुति मानो सीत भानु[3] की ।
चून चुन ल्यावै फूल चारु कर कंजन राषत चंगेरी भरि भाति पानदान की ।।२३९।।

अथ सकोची नाम[4] सषी लक्षन

दोहा

पिय प्यारी के अंग मै साजत भूषन साज ।
सषी संकोची अति चतुर पिय लषि प्यारी भाज ।।२४०।।

यथा

मंजन कै मंदिर मै षंजन नयन ठाढी[5] अली मनरंजन को वाल वतरात है ।
नाजुक वसन तन सुष को सुधारि तन भूषन पहिरिबे को हिय कतरात है ।
ऐसे में पियारो रंगलाल रति आतुर ह्वै कर गहि प्यारी को पियारी सतरात है ।
सषी तौ सकोची लौ लोचन के कोर लषि ठाढी मुष मोर उत प्यारी इतरात है ।।२४१।।

इति श्रीरागस्य सपरिवार भेद संपूर्ण

—०—

१. श्रीरागस्य ख में अनुपलब्ध २. सौरत ख ३. भान क ४. 'नाम' ख में अनुपलब्ध ५. वाढो ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बसंतराग

अथ चतुर्थराग[1] बसंतरागस्य सपरिवाराः लक्षन

दोहा

अति सुंदर विहरत फिरत कर रसाल की मौर।
कहि वसंत सब संत यौ कुसुम सुगंध[2] झकोर ॥२४२॥

यथा

सुंदर सुघर सुकुमार हिय नीके हार करत विहार वन वदन सहास है।
मोर के पषौवन कौ मंजुल मुकुट सीस लीन्हे कर मंजरी रसाल की सुवास है।
छुटत फुहारें ढिग जाय कै निहारे पुनि दृग अनियारे ऐसे कहि कविदास है।
सोहत वसंत राग कैधो रंगलाल पिय गात्रै ब्रजवाल सुनि परम हुलास है ॥२४३॥

अथ बसंतरागस्य षट् रागन्यः

तत्रादो ललित रागनी[3] लक्षन

दोहा

पिय सो रति विपरीत[4] करि मुष चूमत मुसक्यात।
ललित नाम अति ललित तनु भूषन विबिधि सुहात ॥२४४॥

यथा

वरन वरन तन भूषन वसन धारि सेज को सुधारि नारि नवल[5] रसाल है।
सरद[6] मयंक हू तै सरस वदन[7] जोति जाकी[8] लंक अति छीन लोचन विसाल है।

---

१. 'चतुर्थ राग' क में अनुपलब्ध २. सुंध ख ३. रागनील क ४. बिपरीति क ५. वल ख ६. सारद ख ७. मुष ख ८. 'जाकी' क में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहि कविदास दुति दामिनी ते दूनी देषि रंभा उरवसी उर होत अति साल है।
रति विपरीत[1] मै ललित रागिनी सी तिय विथुरी अलक मुष चूमै रंगलाल है।।२४५।

अथ द्वितीय बिभास लक्षन

दोहा

नवल महल मसनंद पै बैठी सुषद सरूप।
देषि नाच[2] रीझत सुघर कहि विभास को रूप।।२४६।।

यथा

बसन सुधारि तिय नवल महल मांह बैठी मसनंद पै अनंद उमगाय कै।
सुंदर सरूप सुकुमार सोहै नाच तिय तिनको वताय आप रीझत रिझाय कै।
करत कलोल गोरे अमल कपोल गोल तैसे दृग लोल[3] की झलक झलकाय कै।
प्यारे रंगलाल जू की मूरति विसूरति है भोर ही विभास ऐसी रहति सुहाय कै।।२४७।।

अथ तृतीय पटमंजरी लक्षन

दोहा

लै कर कागज कलम तिय बैठी सुंदर भौन।
पिय को पाती लिषति है पटमंजरि करि मौन।।२४८।।

यथा

विमल विछौना को विछाय वर वाम बैठी सोहत सरूप जापै कोटि रति वारिये।
आगे पानदान वाली पाछे है चवरवाली[4] ओठ में अधिक लाली मूंगा ते निहारिये।
कागज कलम कर लैकै यौ लिषति इत छाडिकै विदेस रंगलाल छवि धारिये।
फूल नवला सी छवि अवला नवल वह[5] रूप पटमंजरी समान ही विचारिये।।२४९।।

---

१. विपरीति ख २. नाचि ख ३. लो क ४. वारी क वाल ख
५. हवह ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ चतुर्थी[1] पंचमी लक्षन

दोहा

कुंजन में नाचै षरी पिय आगे सुषदान।
मनिन जटित भूषन पहिरि रागिनि पंचमि जान ॥२५०॥

यथा

मनिन जटित हेम भूषन लसत तन वसन विचित्र वर पेन्हे[2] चुनि चारु है।
नाचत नबीन गति भेद जे संगीत मति देष हिय प्रीतम के आनंद अपार है।
गोरो तन भोरो मन बैस हू है थोरो पुनि आछे गजमोतिन के सोहै हिय हार है।
पान सो अधर लाल रंगलाल संग लये पंचमी सी वाल करै[3] विपिन[4] विहार है ॥२५१॥

अथ पंचमी गूजरी लक्षन

दोहा

चंदन[5] द्रुम तर बैठि कै लै कर बीन प्रबीन।
सरस तान[6] गावत तिया ह्वै गुजरी रसलीन ॥२५२॥

यथा

चिकने चिकुर[7] चटकीले चारु पायन लौं मांजे मषतूल ते अधिक छवि छाई है।
चंद दुति मंद होत जाको मुषचंद देषि चंदन के द्रुम तरै बैठी सुषदाई है।
सव रसलीन कर बीन लै वजावत है गावत मधुर स्वर सांवरी सुहाई है।
प्यारे रंगलाल जू के प्रेम पगी वाल वह गूजरी पहिर पग गूजरी सी आई है ॥२५३॥

अथ षष्ट टोडी लक्षन[8]

दोहा

चतुर छबीली छैल कै आगै नाचति नारि।
सषिन सहित टोडी कही उर मोतिन के हार ॥२५४॥

---

१. 'चतुर्थं' क २. 'पेन्हे' क में अनुपलब्ध ३. करख ४. विपन ख ५. बदन द्रुम ख ६. तीन ख ७. चिहुर ख ८. लक्षन ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

राजै मांगटीका औ करनफूल सीसफूल मंजुल रसाल तरु मंजरी श्रवन में ।
गोरी छन जोन्ह की छटा सी छाजै तन छवि कहि कविदास देषि लाजै रति मन में ।
लोचन विसाल उर मोतिन की माल वाल ठाढी रंगलाल जू के आगे आलीगन में ।
टोडी सीलसति[१] तिय हुलसति हियमाह नाचति नबीन गति भांति भांति छन में ।।२५५।।

इति वसंतरागस्य षट् रागन्य:

अथ बसंतरागस्य षट् पुत्रा:

तत्रादौ दीपक लक्षन

दोहा

रति सो डरपति[२] कामिनी रही दीप अचराय ।
ताके भूषन दीप कर दीपक ली उर लाय ।।२५६।।

यथा

वाला सकुचात अकुलात रतिकथा सुनै गृह को बुझाय दीप सोई सुकुमार है ।
आय उत नागर उजागर[३] तरुन धीर दीप सी सरीर[४]दुति दीन्ही विस्तार है ।
रतनजटित[५]वरभूषन तिया[६]के तन ताही के उदोत चहुओर[७] उजियार है ।
वह तो रही लजाय[८]कीन्हों मन भाय तव रंगलाल प्यारो राग दीपक उदार है ।।२५७।।

अथ द्वितीय देसाष लक्षन

दोहा

वांधि सस्त्र अरु अस्त्र सव समर षरोमुसक्याय ।
यौ अभिलाष देसाष के जीतौ अरिसमुदाय ।।२५८।।

---

१. लसना ख २. उरपति क ३. मुजागर ख ४. सरी ख ५. जटि क
६. पिया ख ७. वहु ख ८. लगाय क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

सोहत[1] सरुप अति उत्तम अनूप नव जोवन विसाल भूप सेवत चरन है ।
भीम भुजदंड महिमंडल प्रचंड तेज चंडकर समबीर असरन सरन है ।
सस्त्र अरु अस्त्र सव वाधि अभिलाष ऐसो वैरीबृंदवाहुवल लैहै जीति रन है ।
पुलकित गात[2] मुसिक्यात जात मित्रन सो रंगलाल प्यारे लौ देसाष को वरन है।।२५९।।

अथ तृतीय बिहाग लक्षन

दोहा

नवजोबन तिय अंक लै मुष चूमत मुसक्याति ।
कर सो मीडत कठिन कुच कहि विहाग इहि भांति ।।२६०।।

यथा

चंपक वरन तन आभरन आभा मिलि[3] वसन विचित्र मन मुदित सदार है ।
उज्जल सुधारि सेज सीसा के महल हेरि अंक भरि प्यारी ही सो करत विहार है ।
कहि कविदास गहि दसन दसन वास पकरि कठोर कुच करनि सम्हार है ।
अति अनुराग सो विहाग ऐसो रंगलाल निज प्रतिविव रह्यो मुकुर निहार है ।।२६१।।

अथ चतुर्थ[4] सहाना लक्षन

दोहा

सीस वांधि सुभ सेहरा करि विवाह सुषकंद ।
सुनत राग प्यारी सहित सुषद सहानानंद ।।२६२।।

यथा

भूषन अनेक भांति भांति के वनाये अंग सहित सुगंध पेन्हे कुसुम्भी वसन है ।
सुमन रचित सीस सेहरा लसत नीको चीरा सरपेंच बांधे मूरति मदन है ।

---

१. सोह क २. 'गात' क में अनुपलब्ध ३. मिल क ४. 'चतुर्थ' ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारी निज साथ लै सुनत सुघर राग कहि कविदास मन आनंद मगन है ।
अति गरबीलौ औ छबीलौ छैल रंगलाल सरस सहाना लौ समेत आलिगन[१] है ।।२६३।।

अथ पंचम[२] सारंगनाट लक्षन

दोहा

गहि कदम्व तरुडाल कौ ठाढो वसन विचित्र ।
मग निरषत तिय की तरुन सारंगनाट पवित्र ।।२६४।।

यथा

वन ठन आयो वनवाग के विलोकिबे को ठाढे है कदंव तरु डार कर गहिकै ।
देषत पिया की वाट हाटक बरन तन हाटक के भूषन पहिरि सुष लहिकै ।
केसर तिलक भाल पान सो अधर लाल गावत षयाल सुषदान रहि रहि कै ।
सारंगनाट राग लौ प्यारो रंगलाल आज देष्यो रतिराज सम रूप चित चहि कै ।।२६५।।

अथ षष्ट अहीरनाट लक्षन

दोहा

रोकि घाट की वाट को अति प्रबीन कर घात ।
मोरपक्ष धरि सीस पर अहिरनाट[३] मुसक्यात ।।२६६।।

यथा

नैन अनियारे मतवारे मैन सायक से देषि मृग-मीन हारे षंजन षिसाने है ।
भौंहन की चटकमटक पट पीत हू की ठटक[४] लटक चाल सव मन माने है ।
मोरपक्ष सीस धर मग रोकि ठाढो ह्वैकै अरु ब्रजनारिन सों दान हठ ठाने है ।
ऐसो ठाट ठटिकै प्यारो रंगलाल घाट लसत अहीरनाट सभ[५] जग जाने है ।।२६७।।

इति वसंतरागस्य षट् पुत्राः

---

१. अलिगन क २. 'पंचम' ख में अनुपलब्ध ३. षरो अहिर क ४. बठक ख
५. स क प्रति.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ बसंतरागस्य[1] षट पुत्रबध्वः[2]

तत्रादौ सोरठ लक्षन

दोहा

कर सिंगार सव अंग मै रतिसम रूप रसाल[3] ।
चलि निशीथ पिय मिलन को गावत सोरठ ष्याल ।।२६८।।

यथा

कानन करनफूल नील सरसीरुह से भौंर भननात वाको सुनत सुहात है ।
राजै उर हार आछे मनिन जटित चारु पीवर[4] पयोधरके भार थहरात है।
कुंदन समान अंग कुंद-कलिका से दंत दुति कविदास मोपै वरनी न जात है ।
कामिनी निसंक केलि करिबे को सोरठ लौ रंगलाल प्यारे पास चली अघरात है।।२६९।।

अथ देसाषबधू देवगिरी लक्षन

दोहा

गरबीली आलस भरी अति सुंदर सुकुमारि ।
इंदीवर से नैन जुग देवगिरी वर नारि ।।२७०।।

यथा

सजल जलद हू ते सरस सरीर दुति उच्च कुचकुंभ करिकुंभ तै विसाल है ।
अंवर विचित्र अनुराग ते पहिरि नीके भूषन अनेक उर मोतिन की माल है ।
चलत चलत[5] लंक आनन मयंक सम लोचन चकोर मतवारे से रसाल है ।
सुरत मदालस पियारी देवगिरी ऐसी देषि निज वाल रंगलाल भे निहाल है ।।२७१।।

---

१. 'बसंतरागस्य षट्' क में अनुपलब्ध २. पुत्रबधू क ३. रिसाल क ४. पवर ख
५. चलत क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ बिहाग बधू बंगाली लक्षन

दोहा

तन विभूति सव लायकै लै त्रिसूल कर वाम ।
जोगिन सी मनभावती बंगाली सुभ नाम ।।२७२।।

यथा

अति अनुराग सों विभूति ही को अंगराग लायै सव अंगन अनंग कैसी वाज है ।
वाम कर पल्लव त्रिसूल दै त्रिपुंड भाल दछ करकंज तौ करंड हू विसाल है ।
तरुन तरनि हू ते तेज है सहस गुनै सीस पै[1] जटा-कलाप सरस रसाल है ।
रंगलाल प्यारे के मिलन हेत मानो यह विसद बंगाली [2]ऐसी लीन्ही तप चाल है ।।२७३।।

अथ सहाना बधू त्रिबेनी लक्षन

दोहा

अपने पिय को संग लै वाग विलोकति वाम ।
रंभा तरु तल[3] बैठि कै लसत त्रिबेनी नाम ।।२७४।।

यथा

केतकी कनक और चंपा चारु संपाहू ते सौगुनी सरस दुति गात की सोहात है ।
आछी उरमाल गजमोतिन की फूल माल पीन कुच कुंभ कटि छीन[4] हहरात है ।
वाग में विलास कविदास करि बैठी आय रंभातरु हेठ रंभा देषि कै लजात है ।
प्यारे रंगलाल जू के संग यह अंगना तौ लसत त्रिबेनी मानौ बेनी[5] अलि-पांति है ।।२७५।।

अथ सारंगनाटबधू गुनकरी लक्षन

दोहा

वदन मलिन बैठी सदन पिय वियोग अकुलान ।
अति उदास तन वास तजि ताहि गुनकरी जान ।।२७६।।

---

१. 'में' क प्रति २. 'सी' ख में अनुपलब्ध क में अधिक एवं अप्रयोजनीय ३. तर क ४. छन ख ५. बेरी क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

दीन अति आनन मलीन मन तन छीन प्रीतम[1] वियोग हिय सोग अकुलानी है ।
लोचन अरुन सकरुन सरसीरूह से नीची नारि कीन्है सुधि बुधि हू भुलानी है ।
भूषन रहित गात धूरि लपटाये जात छूटे केसपास पुनि बोलत न वानी है ।
कहि कविदास परवास प्यारो रंगलाल याही ते उदास गुनकरी लौ वषानी है ।।२७७।।

अथ अहीरनाटबधू षंभावती लक्षन

दोहा

केलि भवन वैठी तिया गावत मीठी तान ।
मन हरलेत सुचतुर तिय षंभावती सुजान[2] ।।२७८।।

यथा

कोक की कलानि सव जानत सुजान तिय नवरस भरी तान लेत मन मान है ।
सकल संगीतभेद मूरति सी देषियत सूरत रसीली औ छबीली सुषदान है ।
भूषन विविधि तन वसन सुवास भरे कहि कविदास कंठ कोकिल समान है ।
लसत षंभावती लौ रंगलाल वाल यह रावरी प्रवाह लाल जाको अधरान है ।।२७९।।

इति वसंतरागस्य षट पुत्रवधू संपूर्ण ।।

अथ बसंतरागस्य सषा कल्याननाट लक्षन

दोहा

बीरवेष[3] रनमें षरो अरि देषकर कोप ।
कटि वांधे करवाल है नाट कल्याण सकोप ।।२८०।।

यथा

पूरन[4] प्रचंड तेज भूषन विविधि तन दूषनरहित बीरबेष[5] महिपाल है ।
चिलकत तिलक अलिक चारु केसर को आयुध विविधि कटि वांधे करवाल है ।

---

१ पीतम क २. सुसुजाति ख ३. षेत क ४. पूषन क ५. षेतवीर क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुंदन वरन तन अरुन विसाल नैन देषत अरिन उर कंचन की माल है।
समर अमर सम सषा तौ वसंत ही को राजत कल्याननाट कैधों रंगलाल है ।।२८१।।

अथ बसंतरागस्य सषी सारंग लक्षन

दोहा

कल्पबृक्ष तर[१] बैठि कै कर[२] लै बीन प्रबीन।
सषी सहित गावत सुषद सारंग बैस नबीन ।।१८२।।

यथा

कोमल कमल दल ऐसैं कर पद चारु लोचन विसाल जुग षंजन समान है।
बेनी मृगनैनी की लसत जुग[३]पायन लौ देषै सुष[४]दैनी तिय परम सुजान है।
कल्पतरु तल[५]बैठि कर लै वजाबै बीन वयस नबीन परबीन सुषदान है।
संग है सहेली अलबेली सी अनोषी अति अंगना करत रंगलाल गुनगान है ।।२८३।।

इति वसंतराग सपरिवाराः संपूर्ण ।।

—०—

१. तरु क २. करि क ३. पुनि क ४. 'देषै सुख' ख में अनुपलब्ध ५. तरि क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारनाट राग

कारनाट भेद लक्षन

दोहा

मोरकंठ सी देह दुति लैकर कर करवाल।
सुनत राग अनुराग सों कारनाट क्षितिपाल[१] ।।२८४।।

यथा

दाहिने करनफूल केवरा को राजै चारु कर करवाल गहि बैठ्यो मसनंद है।
नीलकंठ कंठ कैसो काय को वरन नीको भूषन वसन तन सोहै मुष चंद है।
केलिधाम वाम द्वै वजावत तंबूरा तान गावत सुनत मुसक्यात मंदमंद है।
चंवर डुलावत[२] चतुर नारि पाछे षरी कारनाट ऐसो रंगलाल सुषकंद है ।।२८५।।

अथ कारनाटस्य षट रागिन्यः

तत्रादौ नटी लक्षन

दोहा

चढि रसरी सिर कुंभ लै नाचत गावत[३] नारि।
छुईन हाडिन मग षरी नटी कला उरधारि ।।२८६।।

यथा

कंचन कलस सीस घनरस पूरित लै कनक वरन चारु नाचत वरत है।
पहिरि रंगीली चटकीली चारु चूनरीको नट की कलानि मन मानि कै करत है।

---

१. छितपाल क २. झुलावत ख ३. आवत क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीचै नरनारिन को बृंद निरषत ठाढो वाढो है अनंद नीर नैनन भरत है ।
छीन तन कटि औ उतंग कुच तटी पुनि[१] नटी सी वधूटी रंगलाल को छरत है ।।२८७।।

अथ द्वितीय[२] भूपाली रागनी लक्षन

दोहा

रंगभवन बैठी तिया सव तन साजि शृंगार ।
वाट विलोकै पीय की भूपाली उर धार[३] ।।२८८।।

यथा

लायकै सुगंध सव अंगनि उतंग कुच अँगिया पहिरि रंग भौन रति हेत है ।
वारनि संवारि[४] उर मोतिन के हार धारि सेज कौ सुधारि बैठी सषिन समेत है ।
अतर गुलाव पानदान भरि पानन सौं फूल गुलदान धरि सरस सचेत है ।
द्वार ओर देषति है रंगलाल प्रेम पगी भावती भूपाली सी निकाई की निकेत है ।।२८९।।

अथ तृतीय[५] कल्यान रागिनी लक्षन

दोहा

सजि सिंगार नाचत षरी केलिभवन सुषदान ।
पियहि रिझावे गाय कै रागिनी कही कल्यान ।।२९०।।

यथा

इंदु सम आनन औ कानन करनफूल पानन अधर लाल बेनी अतिकारी है ।
उरज उतंग अरु हाटक समान अंग वसन सुगन्ध पेन्है अति सुकुमारी है ।
नाचत नबेली नवजोवन सहेली संग बेली सी लहलहात लेत गति न्यारी है ।
ऐसे रतिमंदिर रिझावै रंगलाल जू को रागिनी कल्यान सम लागत पियारी है ।।२९१।।

---

१. पुन क २. द्वितीय ख में अनुपलब्ध ३. धारि ख ४. सवार क ५. 'तृतीय' ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ चतुर्थ[1] रामकेली रागनी लक्षन

दोहा

मूरति सीताराम की पूजति भगति विसेष ।
करत आरती प्रेम पगी रामकेलि इहि वेष ॥२९२॥

यथा

मंडप विचित्र[2] मनिमानिक जटित चारु मूरति लसत तहां सीता रघुबीर की ।
चंदन लगाय के चढाय कै कुसुममाल पूजन करत दुति देषत सरीर की ।
वाम कर कंज जयमाल अरु दक्ष कर आरती उतारै प्यारी वांके रनधीर की ।
मनही मनावै मनभावन मिलन काम वाम रामकेली[3] मानो सुता सिंधुक्षीर की ॥२९३॥

अथ पंचम[4] कमोद रागनी लक्षन

दोहा

पीत वसन पहिरैं तिया पीत वदन नहि मोद ।
केस षोलि रोवति फिरत वन वन कही कमोद ॥२९४॥

यथा

पियरो वसन तन पियरो वदन अति प्यारे की विरह ब्यथा उर अधिकानी है ।
चंद्र की कला सी छीन अवला नवला नव जौवन उदास मन बोलत न वानी है ।
विथुरी अलक अहिकारी बीलि[5] लाचलचि लोचन अरून[6] रस करुना समानी है ।
दसौं दिसि देषत कमोद सी चकित चित रोवत फिरत वन वन अकुलानी है ॥२९५॥

अथ षष्ट[7] गारा रागनी[8] लक्षन

दोहा

गरबीली गोरी तिया केलिभवन मंह जाय ।
प्यारे सौं लपटति ललकि गारारस सरसाय ॥२९६॥

---

१. 'चतुर्थ' ख में अनुपलब्ध २. पवित्र क ३. रामनी ख ४. पंचम ख में अनुपलब्ध ५. लावी ख ६. 'अरुन' ख में अनुपलब्ध ७. 'षष्ट' ख में अनुपलब्ध ८. 'रागनी' ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

बेंदीभाल लाल वर वदन की रेष राजै टीकी अति नीकी मुष सोभा सरसावनी ।
कुंदन से गात जलजात हू लजात लषि बोलत मधुर वात प्रेम उपजावनी ।
ललकि ललकि लपटात रंगलाल जू सों मैनका तिया सी मैनका सी मन भावनी ।
गोरी गरबीली गारा रागनी रसीली यह सारी चटकीली तन लागत सुहावनी[१] ।।२९७।।

इति कारनाटस्य षट् रागिन्यः ।।

अथ षटपुत्राः तत्रादौ मारु लक्षन

दोहा

चढि हाथी[२] हथियार लै कर कमान औ तीर ।
फेंकत बैरी बृंद पै मारु अति रनधीर ।।२९८।।

यथा

चढिकै मतंग मतवारे पै तुरंग तुंग स्यन्दन पदाति संग सेना चतुरंग है ।
भीर वर बीरन की निरषि धीर तीर लै तुनीर ही सों किन्हें[३] धनु[४] संग है ।
बैरिन के बृंद को विदारि कै उदार अति समर विजय मनमोद सव अंग है ।
लाल सिर चीरा मुष लाल ही लसत बीरा रंगलाल मारु सम सहित उमंग है ।।२९९।।

अथ द्वितीय बहुनागर लक्षन

दोहा

सीसा के मंदिर सरस सीस सजत है पाग ।
सकल कला चातुर कह्यो वहुनागर यह राग ।।३००।।

यथा

सादर सजत सीस पाग अनुराग ही सौं सीसा के महल मुष सारद मयंक है ।
कोमल कमल दल ऐसी देह दुति दीह लोचन बिसाल भौह धनु सम बंक है ।

---

१. सोहावनी क २. हाथी ख ३. कीनो क ४. धनुष गहे ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतर गुलाब कविदास आसपास धरि चावसों चरचि तन चंदनपंक है ।
रूपगुन आगर उजागर उदार वहु नागर सो रंगलाल लसत[1] निसंक है ॥३०१॥

अथ तृतीय टंक लक्षन

दोहा

प्यारी विरह वियोग सों परी सेज मुरझाय[2] ।
टंक सुतिहि छन आय गृह भूषन वसन वनाय ॥३०२॥

यथा

पिय को विरह तन दहत दहन सम तलफै अलप बैस पीर अति गाढी है ।
घसि घनसार उर लावत है वारवार सेज नलिनी[3] दल को सोई काम डाढी है ।
ताहि समै आयगौ पियारो रंगलाल गृह देषि निज कामिनी कौ देह विथा वाढी है ।
टंक[4] सम अंक भरि भूषन रचन लाग्यौ नरम सचिव की सी रीति तहां काढी है ॥३०३॥

अथ चतुर्थ राग सागर लक्षन

दोहा

कीन्हे मदिरा पान झुकि[5] लै प्यारी निज गोद ।
सरस राग सागर सुघर ईहि विधि करत प्रमोद ॥३०४॥

यथा

स्यामल सरोज दुति गात की सुहात अति भूषन वसन भांति भांति के लसत है ।
रूप रतनारे मतवारे मदपान किये नैन अनियारे मृग मीन ही हसत है ।
कहि कविदास ऐसे रूप रनिवास मध्य बैठि सविलास तिय कोरा लै कसत है ।
रंगलाल प्यारो राग सागर समान लषि सषियाँ सकल मन मन ही तरसत[6] है ॥३०५॥

---

१. सत ख २. मुसकय ख ३. नलनी क ४. टेक ख ५. मुकि क ६. त्रसत क त्रसति ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ पंचम लंकदहन लक्षन

दोहा

विरहाकुल वन वन फिरै दावानल तहां देषि ।
वेलिन सो लपटात है लंकदहन इहि भेषि ।।३०६।।

यथा

वन वन डोलत न बोलत वचन कछू पछिन को अछि भारि चाहत चकित ह्वै ।
दौरि द्रुम वेलिन सौं लपटि जात गोरें गात मृदु मुसिक्यात पुनि रहित थकित[१] ह्वै ।
दावानल दौकि देह जानी जात नाही नेह प्यारी को विरह तन जडता जकित ह्वै ।
लंकदहन राग लौ पियारो रंगलाल आली देष्योरी[२] विहाल छवि छाक सों छकित ह्वै ।।
।।३०७।।

अथ षष्ट गौर मालव लक्षन

दोहा

भूषन वसन संवारि कै लाय विविधि अंगराग ।
चल्यो चहत प्यारी सदन गौरा मालव राग ।।३०८।।

यथा

वांधि कै चटकदार चीरा सिर वांधि नीको वागो अनुराग सों पहिरि परवीन है ।
सहज सुगंध तन लायकै सुगंध सव अरुन अधर नागवेली रस भीन है ।
मुदरी जराउ कर पन्ना की पहूची पैन्ह पुलकि कपोल दृग लोल जुग मीन है ।
चाहत चलन निज प्यारी के मिलन हेत रंगलाल प्यारो गौर मालव लौलीन है ।।३०९।।

इति कारनाटराग[३]-स्य षट् पुत्राः ।।

अथ कर्णाटरागस्य[४] षटपुत्रबधूः

तत्रादौ ककुभ रागिनी लक्षन

दोहा

सुरत मदालस नैन सौ देषै पिय की ओर ।
उर चंपा की माल है ककुभ रागनी जोर ।।३१०।।

---

१. घकित ख २. विरह ख ३. 'राग' क में अनुपलब्ध ४. कर्णाटरागस्य' क में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

आनन सुधाकर समान दृग कानलौ पानन अधर लाल अंग सुकुमार है ।
वसन विचित्र तन चित्रित कठोर कुच चंपक को हार उर राजत उदार है ।
सलज सहास कविदास सविलास अति [१] सुरत मदालस तै [२] अंगनि सभार है ।
देषै नैन कोरनिसों प्यारे रंगलाल ओर रागनी ककुभ कैधो प्यारी वर नार है ।।३११।।

अथ द्वितीय अहेरी लक्षन

दोहा

निज मंदिर में भामिनी वैठी सषिन समेत ।
पिय आवन अभिलाष मन [३] करत अहेरी चेत ।।३१२।।

यथा

बैठी तिय मंडल में मंडन सकल साजि कुंडली से केसपास एड़ी [४] लौ परत है ।
लोचन लजीले औ रसीले रसभाव भरे प्रेम अरसीले छबीले छहरत है ।
मुरि मुसक्यात मनभावन को आवन ही आनंदमगन अभिलाष यो करत है ।
रंगलाल प्यारे जू को अंक मे लगाय लेहु [५] सषी सो अहेरी सम अंक में भरत है ।।३१३।।

अथ तृतीय स्यामपूरिया लक्षन

दोहा

माल चंबेली सुघर गूंथत है निज हाथ ।
स्यामपूरिया रागिनी वैठि सषिन के साथ ।।३१४।।

यथा

चंदन चरचि चारु अंगनि में चंद्रमुषी चंपक वरन चपला सी चमकति है ।
चावसों चंवेली ही को हार गूथैं निज हाथ चंचल नयन कटि छाम छमकति है ।

---

१. अंत क २. त क ३. सुनु क ४. एरी क ५. लैहू क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकल सुवास की निवास नवला सी नारि आस पास भौर भननात वमकति है ।
प्यारे रंगलाल जू की वाल स्यामपूरिया लौ सखी सौं तरेरे दृग त्यौर तमकति है ।।३१५।।

अथ चतुर्थ समरफली लक्षन

दोहा

तन उदीसारी पहिरि प्यारी तन सुकुमार ।
बेंदी ईंगुर की अलिक समरफली यह चारु[1] ।।३१६।।

यथा

सारी तन उदी तामे बूंदी है जरद रंग लसत किनारीहू लहरिया लहलही ।
लहंगा ललित अति अमल कमलमुषी राजत नवेली नवजोवन डहडही ।
ईंगुर की बेंदी भाल अंगना अनंग कै सी अंगन सुवास जासु फूलन की महमही ।
देषी री समरफली अवला अमर कै सी पातरी कमर औ गुराई गहगही ।।३१७।।

अथ पंचम अल्हैया लक्षन

दोहा

भूषन वसन उतारिकै चढि चौकी पै नारि ।
स्नान करत जलकुंभ सों कही अल्हैया चारि ।।३१८।।

यथा

चंदन की चौकी चारु बैठी तापै सुकुमार भूषन उतारि[2] सव दीन्हे परिजन को ।
कुंतल विसाल छोर दीन्हे पर पायन लौ नायन रसायन भवावत पगन को ।
सुरभि सलिल लै सहेली सव आस पास कहि कविदास अन्हवावत सुतन को ।
वारियै अल्हैया सी अनेक नार वार वार मोह्यो जिहि वाल रंगलाल पिय ।।
मन को ।।३१९।।

अथ षष्ट बृन्दाबनी लक्षन

दोहा

कुंजनमे[3] राजै षरी गावत तान रसाल ।
प्रीतम को हिय ध्यान धरि बृंदावनी विसाल ।।३२०।।

---

१. चार क २. तार ख ३. कुनन ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

प्रीतम को ध्यान मन राषि कै करत गान परम सुजान तिय कुंजन लसै षरी ।
नीर भरि नैनन सरीर पुलकित पुनि चीर तन सेत लेत सांस ही घरी घरी ।
पीन उर उरज नवीन बैस कटि छीन लसत सषीन मध्य मानौ फूल की छरी ।
नवरस सनी वनी बृंदावन रागनी सी धनी रंगलाल जू की हिये प्रेम सों भरी ।।३२१।।

इति कारनाटस्य षट पुत्रवध्वः समाप्त[1] ।।

अथ कर्णाटरागस्य[2] सषा पषार लक्षन

दोहा

मित्र साथ ही बैठि कै षेलत है चौसार ।
विहसि वचन बोलै कछू राग सभाग पषार ।।३२२।।

यथा

झलकत अंग दुति झीने पट मांह रतिनाथ सो रूचिर रूप रंगरस लीन है ।
अरुन नयन कोर अंबुज समान अलबेलो सो अनेक गुनआगर अदीन है ।
बैठि वर आसन सहास कविदास केलिमंदिर में पेलै चारु चौपर नवीन है ।
कारनाट राग को सषा है पषार यह कैधौं रंगलाल पिय परम प्रबीन है ।।३२३।।

अथ कारनाटस्य सषी ललित पंचमी लक्षन

दोहा

रचि रचि वीरी देत है निज प्यारी के हाथ ।
ललितपंचमी सहचरी रहत सुंदरी साथ ।।३२४।।

यथा

केस सटकारे कारे भौर से लसत प्यारे सुरभि सुधारे सुभ सोभा के निकेत हैं ।
नैन अनियारे मतवारे रतनारे रतिनायक के सायक से घायक सचेत है ।
ऐसे[3] ही सकल अंग आभा अभिमान भरी रचि रचि वीरी वर प्यारी कर देत[4] है ।
ललित ललितपंचमी सी विलसत[5] वाल देषि रंगलाल पिय मन हरलेत है ।।३२५।।

इति कारनाटस्य सपरिवाराः सपूर्ण

---

१. 'समाप्त' क में अनुपलब्ध २. 'कर्णाटरागस्य' क में अनुपलब्ध ३. ऐस क
४. देष ख ५. 'विलसत' ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंडोल राग

अथ हिंडोलरागस्य भेद लक्षन

दोहा

भूलत[1] प्यारी संग लै परै भूमि कर दाउ।
प्यारी अंक में भर लियै यह हिंडोल चित चाउ ॥३२६॥

यथा

रतन रचित पंभ[2] डोरी[3] लाल पाट की है पट्टिका कनकमनि[4] षचित वनाउसों।
झूलत हिंडोरे हिलिमिलि निज प्यारी संग कौतुक करत रागरंग रस भाउसों।
उझकि उझकि झूमि भूमि[5] झुकि परे घूमि विवस हिंडोल निसि रसही के दाउसों।
हाहा कर लीन्ही ज्योंहि अंक[6] भरि प्यारी त्योंहि उठै हंसि रंगलाल प्यारे प्रेमचाउसों॥
॥३२७॥

अथ हिंडोलरागस्य षट रागिन्यः

तत्रादौ दीपका लक्षन

दोहा

दीप लिये द्वारे षरी दीपसिषा सी जोत।
कही दीपकारागिनी चहुं दिसि जगमग होत ॥३२८॥

---

१. झूल ख २. धंभ ख ३. झोरी ख ४. कनसमनि ख ५. झूमि क
६. अंकम क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

सांभ समै अंग अंग[1] सुंदर सिगार सजि साजत सुषद सेज फूलन सवारि कै ।
केलि के भवन तव मिलन मनोरथनि सरस सुगंध सुभ दीप वहु वारि कै ।
देह दुति दीप कैसी दीपका सी दीप लिये देहरी लौ आई प्रानप्यारी पगधारि कै ।
बेगि[2] उठि चलिये जू प्यारे रंगलाल वाल लीजै उर लाय मन मालसी विचारी कै ॥
॥३२९॥

अथ द्वितीय देसकार लक्षन

दोहा

रांति जगी रसरंगमें रति[3]-मंदिर उठि भोर ।
निरषि उनीदे लोचननि देसकार सषि ओर ॥३३०॥

यथा

जामिनी[4] सकल जागि रंगलाल उर लागि भोर उठि बैठी अंग अंग के कहलमें ।
षरी[5] है सहेली अलबेली के सिगारिवे को भूषन वसन पानदान लै टहलमें ।
मुकुर विलोकि मुष पोंछति कपोल पीक अंजन की लीक ओठ मेटत सहलमें ।
सुघर रसीली औ रंगीली अरसीली राजै देसकार रागनी सी रंग के महलमें ॥३३१॥

अथ तृतीय बरारो लक्षन

दोहा

पिय मूरत को ध्यान धरि[6] बोलत नाहिन बोल ।
वैठि वरारी[7] सदन यौं[8] कर पर धरै कपोल ॥३३२॥

यथा

तडित लतासी दुति देह की विराजमान कमल समान आभा आनन की देषिये ।
जकिसी[9] रही है वाम चकिसी चितौति धाम वैठि अभिराम काम कामिनी सी लेषिये ।

---

१. ग्रंख २. बैठि क ३. रमिति ख ४. यामिन क ५. सहेल ख ६. करि ख
७. देशकार ख ८. 'यौं' ख में अनुपलब्ध ९. जसिकी ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारे रंगलाल जू की मूरति विसूरति है पूरति है नैन नीर नीरज विसेषिये ।
करमें कपोल राषि सषि सों न वैन भाषि देषी वर[१].नारी ते वरारी अवरेषिये ॥
॥३३३॥

अथ चतुर्थ[२]मालबी लक्षन

दोहा

सांझ सहेट निकुंज गृह जाय नचावत मोर ।
नाचत आपहू मालवी पिय मिलाय चितचोर ॥३३४॥

यथा

सकल सिंगार सजि काहू एक ब्याज ही सों सांझ समै प्रेमवस घरते निसरिकै ।
गई है सहेट वाम सघन[३] निकुंज धाम रावरो मिलन अभिलाष मन धरिकै ।
नाचत है आप त्यो नचावत मयूरन को मालबी सी सोहत सरस लीला करिकै ।
रंगलाल प्यारे अव नेक न विलंव कीजै नैन रूपरस पीजै लीजै अंक भरिकै ॥३३५॥

अथ पंचम पाहिडा लक्षन

दोहा

पिय परदेश चल्यो चहत सुनि भामिनि सुधि भूल ।
गह्यो पांय तव पाहिडा ग्रीवा डारि दुकूल ॥३३६॥

यथा

चलत प्रवास पिय सुनिके भई उदास आई तिय पास लै उसांस कछु कहि रही ।
भूलें षानपान बोल[४] वोलत है आन आन लागे नैन वान हिय गाढी पीर सहि रही ।
अैन से नयन दोउ देषत है पिय मुष बैनहू कह्यो न जात दुष आगि दहि रही ।
पाहिडा सी प्यारी वह प्यारे रंगलालजू को चरन सरोज करकंजनसों गहि रही॥३३७॥

---

१. चर ख २. 'चतुर्थ' क में अनुपलब्ध ३. घननि ख ४. 'बोल' ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ षष्ट मरहठी लक्षन

दोहा

सुरत समय पिय सों झगरि सरकि तोर उर हार ।
मरहठी हठ ठानिकै मानन ही मनुहार ।।३३८।।

यथा

रति में रसीली रस रोस सो सरकि प्यारी वहकि विहारीजू सों बोलत अरसकै ।
भूषन उतारि नेक मान तन मनुहार तोरि उरहार तीषी[1] चितवनि दरसकै ।
कारे सटकारे वार छोर डारे सुकुमार धुरवा के धारे नीर नैनन वरसिकै ।
अति ही हठीली मरहठी लौ विलोकि तिय[2] रंगलाल प्यारे रहै पायन परसिकै ।।३३९।।

इति हिंडोलरागस्य षट रागिन्य: समाप्त[3]

अथ हिंडोलरागस्य षट[4]-पुत्रा:

तत्रादौ संकराभरन लक्षन

दोहा

सीस कुसुम को टोप धरि भाल चंद संग नार[5] ।
लिये संकराभरन इमि बीन वजावत चारु ।।३४०।।

यथा

सात कुंभ ऐसी दुति गात की सुहात अरु भूषन जगमगात हाटक रचित है ।
घंसि घनसार औ पटीर लपटाय अंग पेन्है पटपीत नवनीत मुदुचित है ।
चंद्रमा ललाट चारु फूलन को टोप सिर फूल ही को हार उर कामिनी सहित है ।
संकराभरन किधौ प्यारो रंगलाल कर बीन लै वजावै अरु गावै तिय हित है ।।३४१।।

---

१. त्रीषी ख २. दीसि क ३. 'इति हिंडोलरागस्य षट रागन्य: समाप्त' क में अनुपलब्ध ४. 'षट' ख में अनुपलब्ध ५. तार ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ द्वितीय[1] सुमतबिलास लक्षन

दोहा

चित्र-सदनमें चारुमति चित्रासन सुषरास।
बैठि नाच निरषै सुघर प्यारो सुमतिविलास ॥३४२॥

यथा

चामी कर धाम चित्र[2] चित्रित विचित्र अति बैठी चित्र आसन पै आनन[3] सहास है।
भूषन अनेक भांति भांति के सुहात तन पहिरे वसन वर सुरंग सुवास है।
निरषत नाच नवजोबन उदार मन अतनु[4] समान दुति करत विलास है।
कहै कविदास राग सुमति-विलास यह कैधो रंगलालपिय प्यारो रूपरास है॥३४३॥

अथ तृतीय तिलककमोद लक्षन[5]

दोहा

रतिमंदिर में बैठिकै दंपति देषत लास।
मुदित परस्पर सुघर यह तिलकमोद कविदास ॥३४४॥

यथा

नायक रसीलो नव[6]-जोवन छवीलो अति रूप गरवीलो गुन[7] सागर सुघर है।
पुरट सिंघासन पै बैठिकै पवित्र तन पद्मा सी पियारी पास लीन्है जू निडर है।
कहै कविदास लास देषत हुलास ही सो ईषत सहास मुष ललित अधर है।
केसर तिलक भाल दीन्हे रंगलाल सम तिलक-कमोद राग राजै मनहर है ॥३४५॥

अथ चतुर्थ केदारनाट लक्षन

दोहा

कटि निषंग करवार कर कांधे धरि धनु धीर।
हयपै[8] होत सवार यह[9] नाटकेदार सुबीर ॥३४६॥

---

१. 'द्वितीय' ख में अनुपलब्ध २. 'चित्र' ख में अनुपलब्ध ३. 'आनन' ख में अनुपलब्ध ४. अतमु ख ५. 'लक्षन' ख में अनुपलब्ध ६. तव ख ७. गन ख ८. पै ख ९. पल ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

तरुन तरनि सम तेज तरवार कर तुंदिल तरुन बीर वर वेष धारी है ।
तीर परिपूरित तूनीर कटि बांधि पुनि कांधे धरि चाप भौह चांप सी सुधारी हैं ।
तरल[1] तुरंगतुंग[2] सुंदर सुरंग तापै चाहत सवार ह्वोन तेरो हितकारी है ।
आली आज रंगलाल देषि तू केदारनाट रागलौ विलोकिहौ तौ भई वलिहारी है ॥
॥३४७॥

अथ पंचम कमोदनाट लक्षन

दोहा

नवल बैस कुंजन फिरै सकल सखान समेत ।
रचित हार गर वांहि[3] धर नाटकमोद सहेत ॥३४८॥

यथा

सहित सषिन चारु चषन झषन सम लषन लसत नीकी रखन पगन की ।
अंगन गुराई कर चरन ललाई फेरि फिरन सुहाई तरै कुंजन सघन की ।
कहि कविदास फूलमाल की वनावन औ तैसी तन झलकन जटित[4] नगन की ।
आलीरी कमोदनाट कैसी रंगलालजू की लागत पियारी छवि कंठ के लगन की ॥३४९॥

अथ षष्ट सक्रौन लक्षन

दोहा

वानिक अंग वनाय निज बैठ्यो सीसा गेह ।
तियहि देषावै छवि महा राग सक्रौन सनेह ॥३५०॥

यथा

चीरा सीस चारु सरपेंच तापै हीरा ही को बीरासो अधर लाल वारिज वदन है ।
मोतिन[5] रचितवार[6] मोतियाहू[7] के हार उर मोतिन की पांति सम लसत रदन है ।
कहै कविदास सव अंगन सुगंध लाय वानिक वनाय बैठो सीसा के सदन है ।
प्यारी को दिषावै दुति देह की सक्रौन सम प्यारो रंगलाल मानो मूरता मदन है ॥३५१॥

इति हिंडोलरागस्य[8] षट् पुत्राः संपूर्ण ॥

---

१. तुरग ख २. रंग ख ३. बांधि ख ४. नटित ख ५. मोरन ख ६. हार क, ख ७. 'मोतियाहू' ख में अनुपलब्ध ८. हिंदोलस्य ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ षट्पुत्रबधू[१]

तत्र[२] प्रथम चैती लक्षन

दोहा

कुसुम गुछ कर लै फिरै फुलवारी विच वाम ।
चपला सी चैती चतुर कहि कविदास सकाम ।।३५२।।

यथा

बेंदी भाल वाल के विराजै लाल लाल ही की विविधि विसाल उर मोती-माल धारी है।
सोहैं कर कंकन औ किकिनी कलित कटि पायल[३] पगन मनि नगन सुधारी है।
लीन्है सषी साथ हाथ गुछा येक फूल ही कौ आनंद की मूल रंगलाल पिय प्यारी है ।
चैती सी चटक वारी[४] चूनरी पहिरि सारी वारी में फिरत कविदास मे निहारी है ।।
।।३५३।।

अथ द्वितीय सुघराई लक्षन

दोहा

रंगमहल में वैठि कै रचत हार पिय हेत ।
सुनत राग अनुराग सों सुघराई चित चेत ।।३५४।।

यथा

बैठी रंगमहल रंगीली रतिरंग चाउ भरी सहचरी संग अंग छवि छलकै ।
भूषन वसन तन भांति भांति पैन्है पुनि प्यारे के मिलन हेत प्यारी मन ललकै ।
कहि कविदास कलगान करआसपास तिय सविलास मुसक्यान मुष झलकै ।
गूथै मनिमाल रंगलाल पिय प्रेमपगी सुघराई सी सुधर कामरस रलकै ।।३५५।।

---

१. 'षट पुत्रवधू' में अनुपलब्ध २. 'प्रथम' क में अनुपलब्ध ३. पायन ख
४. करि ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ तृतीय काफी लक्षन

दोहा

अलि गर डारि भुजानिको बैठि झरोषा बीच ।
निरषत पिय के रूप को काफी हित रस सीच ॥३५६॥

यथा

कारे सुकुमार सटकारे से सुगंध भारे नीट निरवारे वार सोहत सुनीके है ।
नैन अनियारे कजरारे काम सायक से पानि पभरारे लषि मीन मृग फीके है ।
असी तिय सुघर सलोनी सी झरोषा बैठि देषत पियारे रंगलाल मनहीके है ।
सांवरी सरस तन वानक वनावरी के काफीसी सुजान[1] कंठ डारत अलीके है ॥३५७॥

अथ चतुर्थ लीलावती लछन

दोहा

पाग पियारे की सुघर[2] धरी सीस निज नारि ।
सषिन जनावै प्रेमपगी लीलावती सुकुमारि ॥३५८॥

यथा

अलिन में वाल बैठि वालम पियार पगी लागी निज भागही[3] सुहागही जनावने ।
रूपगुन आगरि रसीली सील सागरि औ नागर नबेली तन भूषन वनावने ।
लीलाकरि लीलावति अैसी सीसधाम सीस पाग रंगलाल जू की बांधि मनभावने ।
लागति है कैसी तोहि मेरी सौंह साची कहौ ऐसे कविदास लागी सषिन दिषावने ॥
॥३५९॥

अथ पंचम[4] हर्रसिंगार लक्षन

दोहा

केलि भौन बैठि तिया करत अंग सिंगार ।
षरी सहचरी सामुहै रागनि हर्रसिंगार ॥३६०॥

---

१. सु भुजान ख २. सुर ख ३. भाहे ख ४. 'पंचम' ख में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा

कंचन के षंभ षरे रतन जराय जरे[1] विविधि विचित्र भरे चित्र वहुओर है।
ऐसे रतिधाममें सुकामना के कामही की वाम तनु छाम बैठी उरज कठोर है।
सषिन बुलाय तन भूषन वनाय मन[2] मोद सरसाय कीन्ही चंदन की घोर है।
प्यारी हरसिगार लौं उदार रंगलालजू की जाको मुषचंद चाहि रहत चकोर है ।।३६१।

अथ षष्ट नायकी लक्षन

दोहा

माती मदिरा-प्रेमसों करि प्यारे सों केलि।
वहकि वहकि बोलै वचन नायक संकुच[3] सकेलि ।।३६२।।

यथा

प्रेम-मदमाती मुष-मंजुल मनोज रसराती सकुचाती नाहि सषी-गन संगमै।
चंपक कनक कमनीय तान तैसी पुनि कंज मैन अैसी छवि जैसी वाके अंगमैं।
कंत रतिकंत सोई कंत रंगलाल रूरो पूरो चंद पून्यो को सो तासो रतिरंग मै।
नायकीसी नायका नवेली नागकन्यका सी वहकि वहकि वात वोलत उमंगमै ।।३६३।।

अथ हिडोलरागस्य सषा बडहंस लक्षन[4]

दोहा

अति सुदर देषै घटा[5] कहत मित्र सां वात।
झूल हिंडोला तिय सहित यह वडहंस विष्यात ।।३६४।।

यथा

स्याम घन[6] घेर-घेर आये चहुओर फेर हेर हेर हियमें उछाह उमगत है।
उड़ि बगपाति जोति दामिनी जगमगात[7] घन घहरात पौन सीतल लगत है।

---

१. रे ख प्रति २. न ख प्रति ३. सकुल ख ४. अथ सषा वडहंस ख ५. घट ख ७. न ख ७. जगमगाति क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारे रंगलालजू रसाल वाल अंक लाय झूलिये हिंडोरा हीरालाल के जगत है ।
सषा वडहंस कविदास जो[1] हिंडोलही को कर परिहास ऐसे प्रेममे पगत हैं ॥३६५॥

अथ सषी भीम पलासी लक्षन

दोहा

प्यारी को उवटन करत उरज दावि मुसुक्यात ।
नाजुक रूपवती चतुर भीमपलासी भात ॥३६६॥

यथा

अरुन नयन ओठ अंगकी अमल आछी अंबुज समान मुष सोभा सरसानी है ।
कोमल करन अंग उवटै उछाह भरी उरज अधिक दाबै प्यारी सतरानी है ।
करि परिहास कविदास सविलास ऐसी मुरि मुसक्याति तिय रूप रजधानी है ।
भीमहि पलासी कमलासी तो हिंडोल कै सी आली[2] चंद की कलासी रंगलाल ।
मुषदानी है ॥३६७॥

इति हिंडोलरागस्य सपरिवारभेद[3] संपूर्ण ॥

—०—

१. यों ख २. 'आली' ख में अनुपलब्ध ३. 'भेद' क में अनुपलब्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ राग[1] रागिनी के समय प्रति

कवित्त

भैरव औ रामकरी ललित विभास सूहो गूजरी विलावली वडहंस मन मानिये ।
सिंधुरा वरारी सुघराई देवगिरी और जैतसिरी देसकार जोगिया हू जानिये ।
पाहिड़ा असावरी अल्हैया देवगंधार पुनि भैरवी बंगाली गुनकरी पहिचानिये ।
भोरतें पहर लौ सुघर इन रागन को गाइबो सरस कविदास मन आनिये ॥३६८॥

टोडी औ रंभेली रेवा देसी पटमंजरी पुनि पंचमी ककुभ औ कुमारी सरसाइये ।
सोहनी विरागी सुभ सावंत दिसाष और लीलावति देवकली पूरे प्रेम पाइये ।
अष्टी और सारंग सुषद सुभगा हू लै वृंदावनी हरिसिंगार चारु चित लाइये ।
द्वितीय पहर लौं प्रथम पहरतें राग येई कविदास सविलास सव गाइये ॥३६९॥

मालकौस गौड नटसारंग अहीर मालसिरी धनासिरी टंक औ त्रिबेनी है ।
सरस वसंत सुद्धनाट जैजवंती पुनि गौरा नटमलारी तो हिय सुषदैनी है ।
सहित हिंडोल कविदास सविलास भीमपलासीहू लास देत जैसे[2] मृगनैनी है ।
जाम जुग बीते पर तीसरे पहर ताई येई राग गावो जामे तान अति पैनी है ॥३७०॥

पूरबी अहेरी राजविजै और पूरिया तौ गौरी षंभावती माल गौरा ग्रंथ गायो है ।
दीपक औ मालबी संक्रौन चैती चायन सौं गायबो श्रीराग चौथे जाम मन भायो है ।
वारिद उमड़ि जव आवे कविदास तव गावत मलार चित चैन अति पायो है ।
जुद्ध में जुरत जव क्रुद्ध भट दोउ तव मारुराग गाय महाजोधन लरायो है ॥३७१॥

ईमन हमीर स्याम संकराभरन सुद्ध छायानाट षटराग सुनि सुष पाइये ।
कान्हरा कल्यान औ अडाना स्यामपूरियाहू काफी करनाट औ हमीरनाट चाइये ।
कहत कमोद हेम षेमकल्यान पुनि वागेस्वर भूपाली लंकदहन गनाइये ।
कहि कविदास सविलास येई रागिनी के सांझते प्रथम जाम जामिनी के गाइये ॥३७२॥

---

१. 'राग' क में अनुपलब्ध २. जै ख प्रति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नायकी केदारा औ केदारनाट परज पुनि सुषद सहाना मांझ सोरठ समेत है।
तैसोई तिलकमोद तैसोई कमोदनाट गाय जुग जामलौ विहाग सुष देत है।
गाय बहुनागर विहागराग कोई पुनि सुमत-विलास मरहठी प्रीति हेत है।
गावत समरफली सरस्वती रात जव बीते तीन जाम कविदासजू सचेत है ।।३७३।।
सुभगा पषार भठियाला राग सागर औ रिषभ विलावरी को सुनत सुहात है।
तैसीय ललितपंचमीहू पंचसायक को देत उपजाय मन मोद सरसात है।
बीते निसि तीन जाम प्रात ताई स्याम राम गावत सकल येई राग अवदात है।
राग और[1] रागिनी के समय विचार चित कहि कविदास सविलास इहि भात है ।।
।।३७४।।

दोहा

इम रागन को गाईये जथा समय मति चारु।
नृप आयस कविदास भनि नाहिन काल[2] विचारु ।।३७५।।

इति रागबेला समाप्ता:

अथ गायन गुनदोस कथन

दोहा

गायन तीन प्रकार के उत्तम अधम समान।
उत्तम के लक्षन सुनो कहि कविदास प्रमान ।।३७६।।

ग्राम[3] ताल लय प्रभृति गुन सहित जु गावै राग।
सो उत्तम गायन कह्यो सुनत होई अनुराग ।।३७७।।

कछु इक गुन सों हीन जो गावे ताल प्रमान।
तासों मध्यम कहत है जे संगीत सुजान ।।३७८।।

भेद न जानत कछुक सो गावै राग विलास।
गाइन अधम विचार चित लागत नाहि रसाल ।।३७९।।

---

१. औ क प्रति २. काय ख प्रति ३. म ख प्रति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ गायन दोस

दोहा

संदृष्टादिक दोस है गायन के पंचबीस ।
कहत ताहि निरधारि कै पंडित परम कबीस ।।३८०।।

छपै

कहि संदृष्ट सु ताहि रदन सम गावै रागहि ।
पुनि उदघ्रिष्ट विचार विरस रव मन नहि लागहि ।
भयजुत भीत विचार बेग गावै सो संकित ।
कंपित ताहि सुजान गात सुर कंप सुअंकित्त ।
विकराल वदन विस्तार कै कपिल अधिक श्रुत्त न्यून[1] गनि ।
काक क्रूर रव गावइ सो काकी संगीत भनि[2] ।।३८१।।

तालहि हीन विताल कर भकधर मुष गावै ।
अज सो वदन वनाय गाय[3] उद्धेह नहि भावै ।
कहिये झंवक ताहि भाल मुष ग्रीव विकारी ।
गावत कंठ फुलाय ताहि तुंवक कहि भारी ।
गावै विकृत ग्रीव[4] जो ताको वक्री दोष कही ।
गात पसार जु गावई ताहि प्रसारी ग्रंथ लही ।।३८२।।

कहत निमीलक नाम मूद गावै जो नैनहि ।
नीरस कठिन अबूझ गान कै विरस कुवैनहि ।
कहै उपस्वर ताहि विरक्त[5] वरज स्वर जो है ।
पुनि अव्यक्त सुजान ब्यक्त आषर नहि सोहै ।
स्थान तीन सों भ्रष्ट पुनि स्थान भ्रष्टता को कहत ।
मिश्रित[6] कै गावै सकल सो मिश्रक गुनना चहत ।।३८३।।

---

१. न्युक क २. नि ख ३. गै ख ४. बकि तालब क ५. बिरक्त क में अनुपलब्ध ६. मिश्रत क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा

स्थाइन सों निरमुक्त सो अनवधान कहि ताहि ।
जो नासासुर गावई सो अनुसासिक आहि ॥३८४॥

इति गाइन दोष

दोहा

सिक्ष्याकारक रसिक पुनि तीजो है अनुकार ।
रंजक भावक जानिये गाइन पांच प्रकार ॥३८५॥

अषिल कला सिक्ष्या विसै दक्ष्य सुसिक्ष्याकार ।
आपुहि रसजुत जानकरि रसिक कह्यो निरधार ॥३८६॥

अपने बुद्धि विसेष तें पर छाया अनुसार ।
गावै चतुराई लियैं ताहि कहै अनुकार ॥३८७॥

मनरंजन सव जनन को करै गान कै प्रीत ।
रंजक तांकों कहत हैं जे प्रबीन संगीत ॥३८८॥

गीत अनेकनी भांतिकै गावै भाव समेत ।
भावक तासों कहत है जिनके है चित चेत ॥३८९॥

सो गायन पुनि तीन विधि एकल जमल विधान ।
गायन बृंद विचारिकै लछन तिनको जान ॥३९०॥

एकल एकलो गाइयें जमल सो गावै दोय ।
वहुजन सहित जु गावई बृंद सुगायन होय ॥३९१॥

अथ गुनकथन

कवित्त

रूप मनोहर जोवन जासु गिरा मधुराई लियै मन मोहै ।
उज्जल बेष असेष कला चतुराई समेत सभासद सोहै ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छंद प्रबंध को भेद अलंकृत कोस पढै प्रतिभा जुत जोहै ।
ताल कला लय ग्राम प्रबीन सुगायन तो कविदास भलो है ॥३९२॥
द्वेष विराग सों हीन सदा रसलीन प्रबीन सबै सुषकारी ।
लोकन के मनरंजन को द्रुत गीत रचै मन आनंद भारी ।
देस असेस की वात सुनै समुझै ततकाल महा उपकारी ।
ये गुन संजुत गायन तो लषि ग्रंथन में कविदास विचारी ॥३९३॥

इति गाइन गुनदोष समाप्त

अथ ताल

दोहा

पंचानन पग बंदिकै गौरि-गजानन बंद ।
ताल भेद संछेप कहि शुक्ल यसोदानंद ॥३९४॥

ताल को प्रयोजन

दोहा

तौर्यत्रिक को जानिये मतवारो मातंग ।
ताको अंकुस ताल है सव बिधि करत सुधंग[1] ॥३९५॥
काल क्रिया अरु[2] मान ये तीनो जंह इक ठौर ।
उपजत है सो ताल कहि कविता को सिरमौर ॥३९६॥
काल छनादिक जानिये क्रिया हस्त संजोग ।
मान तासु विश्राम है कहत सुमति कवि लोग ॥३९७॥
प्रान जान दस ताल के तासों संजुत ताल ।
शिव-शक्त्यात्मक सुषद है बरनत बुद्धि विसाल ॥३९८॥

अथ दसप्राण लक्षन

कालमार्ग अरु क्रिया कहि अंग जाति[3] ग्रह[4] जान ।
कला सहित लय गति[5] विविधि प्रस्तारक दस प्राण ॥३९९॥

---

१. सुगंध ख २. रु ख ३. जुत ख ४. ह ख ५. तजि क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुद्रुतादि वहुभेद है वर्नंत वहु विस्तार।
तालन को नहि अंत है द्वादस सुगम विचार ॥४००॥

जामे धुरपद गावई कलावंत सविलास।
सो चौताला आदि है[1] कहत धीर कविदास ॥४०१॥

चौताला आडा इक सम चौताला चारु।
चौताल सवसौ वड़ा कहि कविदास विचारु ॥४०२॥

जलद तिताला येक है धीम तिताला आन।
झंप ताल कवि कहत है सूल फाकता मान ॥४०३॥

रूपक होरी ताल पुनि और सवारी ताल।
कुंदु नाच इक ताल अरु कहि कवि बुद्धि विसाल ॥४०४॥

एई वरते गानमें अव गायन परवीन।
ताको लक्षन बूझि चित वरनत है रसलीन ॥४०५॥

ब्रह्म सुलक्ष्मी आदि है[2] ताल सकल संगीत
काज न कछु तिनके इते तातै कहै न मीत ॥४०६॥

अथ चौताला को लक्षन

पहिले गुरु द्रुत तीन पुनि सो चौताला जान।
विरदी द्रुतपै परतु है ये लक्षन पहिचान ॥४०७॥

द्रुत तीनौं प्रथमहि रखै पुनि विरदी गुरु अंत।
सम चौताल ताहि सव वरनत कवि वुधिवंत ॥४०८॥

द्वै गुरु प्रथमहि अंत[3] द्रुत द्वै ही जामे होय।
सो आडा चौंता रचित कहत सयाने लोय ॥४०९॥

तीनो ताल समान ही तीनो लघु परिमान।
विरदी परै सो अंतमै ताहि तेताला जान ॥४१०॥

पहिलें द्वै लघु अंत गुरु अंतहि होत विराम।
विरदी गुरु पै जानियां धीम तेताला नाम ॥४११॥

---

१. दै क प्रति २. दै क प्रति ३. अंक ख।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इक लघु द्वै द्रुत अंत में विरदी द्रुत पै जासु ।
झंप ताल तासों कहत विप्र सुधी[1] कविदासु ॥४१२॥

द्वै द्रुत पहिले दीजिये अंत येक लघु देहु ।
सूलफाकता तालसों चतुर जान तुम लेहु ॥४१३॥

गुरु येकै जंह दीजिये विरदी गुरुपै जासु ।
इम[2] होरीके तालको लक्षन कहि कविदासु ॥४१४॥

पहिले द्वै गुरु येक द्रुत पुनि एकै गुरु अंत ।
कहत सवारी ताल यह कवि कोविद बुधिवंत ॥४१५॥

इति ताल समाप्त ॥

लै संगीत समुद्र सों अपनी मति अनुसार ।
रागमाल मनिमालसो ग्रन्थ कियो उद्धार[3] ॥४१६॥

जो पढिहै चित लाय रागमाल नव ग्रंथ यह ।
समुझै अर्थ बिनाय राग रागिनी ताल को ॥४१७॥

इति श्रीमन्मालवीय द्विज[4] सकल कला-कोविद रसिक

सुषकंद शुक्ल यसोदानंद विरचिता रागमाला समाप्ता ॥

—०—

१. धीर ख में अधिक । २. इक ख । ३. उच्चार क ४. 'श्रीमन्मालवीय द्विज' क प्रति में अनुपलब्ध ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्रा
भरतनिधि, व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi